

3.3 मुख्य परीक्षा की तैयारी की रणनीति

3.4.1 मुख्य परीक्षा का लक्ष्य—प्रारम्भिक परीक्षा मुख्य परीक्षा व साक्षात्कार प्रक्रिया का प्रवेश द्वार है। इस परीक्षा की उपयोगिता भी मुख्य परीक्षा के लिए पात्रता हासिल करने तक ही सीमित है लेकिन मुख्य परीक्षा की तैयारी के पीछे प्रतियोगी का नजरिया एवं लक्ष्य अलग होता है। इसमें वह पूर्णांक में से अधिकतम से अधिकतम अंक लाने की कोशिश करता है ताकि उच्चतम लक्ष्य के तहत वह टॉपर बने या कम से कम लक्ष्य में अंतिम रूप से चयनित हो सके। इस परीक्षा का मूलमंत्र या लक्ष्य परीक्षा में टॉप करना होना चाहिए।

3.4.2 मुख्य परीक्षा का प्रारूप, पाठ्यक्रम एवं अंक विभाजन—प्रारम्भिक परीक्षा के प्रश्न पत्र में प्राप्त अंकों के आधार पर सामान्यतः रिक्त पदों के 15 गुणा अभ्यर्थियों को मुख्य परीक्षा के लिए पात्र घोषित किया जाता है। आयोग अपने विवेकाधिकार से इनके लिए क्वालिफाई न्यूनतम अंक पर उपस्थित सभी अभ्यर्थियों को मुख्य परीक्षा के लिए आमंत्रित कर सकता है।

- मुख्य परीक्षा में कुल चार प्रश्न पत्र 800 अंक के होंगे एवं सभी प्रश्न वर्णनात्मक होंगे इसलिए सभी प्रश्न के उत्तर संक्षिप्त, मध्य, दीर्घरूप में लिखित या वर्णनात्मक रूप में देने होंगे।
- परीक्षार्थी हिन्दी या अंग्रेजी दोनों माध्यम में से किसी एक माध्यम में परीक्षा दे सकेगा।
- सामान्य हिन्दी एवं सामान्य अंग्रेजी के प्रश्न पत्र का स्तर सीनीयर सैकेण्डरी स्तर का एवं शेष तीन प्रश्न पत्रों का स्तर स्नातक डिग्री स्तर का होगा।

(i) मुख्य परीक्षा का प्रारूप

क्र.सं.	प्रश्न पत्र	विशय	अधिकतम अंक	समय
1	प्रथम	सामान्य अध्ययन-I	200	3 घंटे
2	द्वितीय	सामान्य अध्ययन-II	200	3 घंटे
3	तृतीय	सामान्य अध्ययन-III	200	3 घंटे
4	चतुर्थ	सामान्य हिन्दी (120 अंक) एवं अंग्रेजी (80अंक)	200	3 घंटे

(ii) मुख्य परीक्षा पाठ्यक्रम

प्रश्न पत्र	भाग	पाठ्यक्रम विवरण
प्रथम	युनिट-I	• इतिहास : राजस्थान का इतिहास, कला संस्कृति, साहित्य परम्परा और धरोहर, भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, आधुनिक विश्व का इतिहास (1950 ईस्वी तक) (75 अंक)
	युनिट-II	• भारतीय अर्थशास्त्र, वैश्विक अर्थव्यवस्था, राजस्थान की अर्थव्यवस्था (65 अंक)
	युनिट-III	• समाज शास्त्र प्रबंधन, लेखांकन व अंकेक्षण- (60 अंक)
द्वितीय	युनिट-I	• प्रशासनिक नीति शास्त्र (65 अंक)
	युनिट-II	• सामान्य विज्ञान एवं तकनीकी (70 अंक)
	युनिट-III	• पृथ्वी विज्ञान (भूगोल व भूविज्ञान) : विश्व, भारत, राजस्थान का भूगोल एवं भूविज्ञान (65 अंक)
तृतीय	युनिट-I	• भारतीय राजनैतिक व्यवस्था, विश्व राजनैतिक एवं समसामयिक मामले (75 अंक)
	युनिट-II	• लोक प्रशासन एवं प्रबंधन की अवधारणा, मुद्दे एवं गत्यात्मकता (65 अंक)
	युनिट-III	• खेल एवं योग, व्यवहार एवं विधि (60 अंक)
चतुर्थ	युनिट-I	• सामान्य हिन्दी :-(120 अंक) भाग (अ) व्याकरण 50 अंक भाग (ब) संक्षिप्तीकरण, पल्लवन, पत्र लेखन, प्रारूप लेखन, अनुवाद (50 अंक) भाग (स) निबंध लेखन (20 अंक)
	युनिट-II	• General English : 80 Marks, Part (A) Grammar and Usage (20 Marks) Part (B) Comprehension, Translation and Precis writing (30 Marks) Part (C) Composition and Letter writing (30 Marks)

(iii) प्रश्न पत्र का प्रारूप एवं अंक विभाजन

आरएएस मुख्य परीक्षा के प्रथम तीन प्रश्न पत्र तीन युनिट में एवं प्रत्येक युनिट तीन भाग (भाग-अ, भाग-ब, भाग-स) में विभाजित होता है। युनिट का विभाजन किया जाकर पाठ्यक्रम के अनुसार प्रश्न पूछे जाएंगे जबकि प्रत्येक युनिट के भाग-अ में लघु उत्तर (15 शब्द), भाग-ब में मध्य उत्तर (50 शब्द) व भाग-स में दीर्घ उत्तर (100 शब्द) के प्रश्न पूछे जाएंगे।

प्रश्न पत्र	प्रश्न पत्र का भाग	प्रश्न संख्या	अंक प्रति प्रश्न	कुल अंक	शब्द सीमा
I	भाग-अ	25	02	50	15
	भाग-ब	16	05	80	50
	भाग-स	07	10	70	100
II	भाग-अ	15	02	30	15
	भाग-ब	14	05	70	50
	भाग-स	10	10	100	100
III	भाग-अ	25	02	50	15
	भाग-ब	16	05	80	50
	भाग-स	07	10	70	100
IV	भाग-अ	हिन्दी / अंग्रेजी		50+20=70	
	भाग-ब	हिन्दी / अंग्रेजी		50+30=80	
	भाग-स	हिन्दी / अंग्रेजी		20+30=50	

3.4.3(1) मुख्य परीक्षा कट ऑफ विश्लेषण- मुख्य परीक्षा में अधिकतम अंक लाने की रणनीति के तहत अभ्यर्थी को पहले परीक्षा के पाठ्यक्रम का अध्ययन, फिर पूर्व के वर्षों के प्रश्नपत्रों का विश्लेषण एवं परीक्षा की अंतिम कट ऑफ को भी देखना उचित रहेगा। यद्यपि मुख्य परीक्षा के लिए कट ऑफ के आधार पर चयन के लिए अपना लक्ष्य तय नहीं किया जा सकता है क्योंकि यहाँ परीक्षार्थी का उद्देश्य कटऑफ जितने अंक लाना नहीं होता है। सामान्यतः मुख्य परीक्षा में कट ऑफ के आस-पास अंक लाने वाले अभ्यर्थियों के कुछ विशेष श्रेणियों को छोड़कर चयन की बिल्कुल भी संभावना नहीं होती है और राज्य सेवा में तो बिल्कुल नहीं। अतः मुख्य परीक्षा की रणनीति बनाने के लिए पूर्व के वर्षों में राज्य सेवाओं में चयनित अभ्यर्थियों की अंक तालिका मार्गदर्शक का काम करेगी। इन सेवाओं में चयनित अपनी पहचान के एक-दो अभ्यर्थियों के विषयवार लिखित परीक्षा के अंकों एवं साक्षात्कार के बाद में कुल अंकों से उनकी मेरिट के आधार पर हमें लक्ष्य तय करना है कि लिखित परीक्षा में औसतन श्रेणीवार कितने अंक लाने पर चयन की प्रबल संभावना होती है।

मुख्य परीक्षा की कटऑफ का विश्लेषण

(i) मुख्य परीक्षा की अंतिम कटऑफ

Category	नॉन टी.एस.पी (Non T.S.P)		
		2018 (800 में से अंक)	2016 (800 में से अंक)
Gen	Gen	344	327
	Female	344	327
	WD	226.75	217
	DV	344	327
OBC	Gen	344	327
	Female	344	327
	WD	226.75	217
	DV	-	303
MBC	Gen	343.75	-
	Female	343.75	-
	WD	187.25	-
	DV	-	-
SC	Gen	310.25	295
	Female	310.25	288
	WD	189.50	200
	DV	-	271
ST	Gen	327.25	309
	Female	327.25	296
	WD	182	199
	DV	-	-
Horixantal Reservation	BL/V	178.25	264
	Ex Ser.	142	247
Gen	Gen		332.75
	Female		320.25
SC	Gen		316
ST	Gen		274.25
	Female		274.50

(ii) मुख्य परीक्षा वर्ष-2016 के टॉप 10 अभ्यर्थियों के अंकों का विवरण

रैंक / पेपर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
प्रथम प्रश्नपत्र	104	93	106	92	84	101	115	123	92	95
द्वितीय प्रश्नपत्र	119	116	103	126	106	102	114	98	96	97
तृतीय प्रश्नपत्र	90	102	97	99	108	101	90	93	102	102
चतुर्थ प्रश्नपत्र	110	101	110	89	111	105	96	108	112	107
योग	423	412	416	406	408	409	415	422	402	401
साक्षात्कार	70	81	75	79	73	74	68	60	80	80
महायोग	493	493	491	485	483	483	483	482	482	481

(iii) मुख्य परीक्षा वर्ष-2018 के टॉप 10 अभ्यर्थियों के अंकों का विवरण

रैंक	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
------	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----

प्रथम प्रश्नपत्र	101.75	113.25		105.50						
द्वितीय प्रश्नपत्र	107.00	119.50		120.75						
तृतीय प्रश्नपत्र	102.25	93.50		98.25						
चतुर्थ प्रश्नपत्र	138.00	116		124.00						
लिखित परीक्षा योग	449	442.25	445.25	448.50	441.75	427.25	433.75	428.50	440	426
साक्षात्कार	77	80	75	67	70	82	75	80	68	82
महायोग	526	522.25	520.75	515.50	511.75	509.25	508.75	508.50	508	508.00

मुख्य परीक्षा की वर्ष 2016 एवं 2018 की कटऑफ का वर्गवार आंकलन किया जाए तो प्रतीत होता है कि इस परीक्षा की दोनों वर्षों की वर्गवार कटऑफ में ज्यादा अंतर नहीं है। सामान्य, ओबीसी, एमबीसी, आदि वर्गों की कटऑफ 40-45% के बीच, एस.सी. व एस.टी. वर्ग की 37-40% के बीच रही हैं लेकिन इस कटऑफ के बजाय इन परीक्षाओं में टॉपर्स के अंकों का अवलोकन एवं अध्ययन अभ्यर्थी के लिए ज्यादा हितकारक एवं मार्गदर्शन रहेगा इसलिए वर्ष 2016 की परीक्षा के टॉप 10 चयनितों के मुख्य परीक्षा तथा साक्षात्कार के अंकों को देखने पर पाया गया कि टॉपर्स के लिखित परीक्षा में 800 में से 423 अंक साक्षात्कार में 70 अंक कुल 493 अंक (900 में से) तथा 10वीं रैंक के अभ्यर्थी के लिखित परीक्षा में 401 अंक एवं साक्षात्कार में 80 अंक कुल 481 अंक है। इस तरह प्रथम दस रैंक पर चयनित अभ्यर्थियों के लिखित परीक्षा में 401 से 423 के बीच तथा कुल अंक 481 से 493 के बीच है। टॉप 10 के मुख्य परीक्षा में 53 प्रतिशत अंक है।

इसी प्रकार वर्ष 2018 के टॉप 10 अभ्यर्थियों के मुख्य परीक्षा एवं साक्षात्कार के अंकों का अवलोकन करने पर पाया गया कि मुख्य परीक्षा में 800 में से अधिकतम 449 अंक एवं 10वें स्थान के अभ्यर्थी के 426 अंक है। मुख्य परीक्षा व साक्षात्कार के योग के आधार पर सर्वाधिक 526 अंक एवं 10वें स्थान के अभ्यर्थी के 508 अंक है। टॉप 10 के मुख्य परीक्षा में 56 प्रतिशत से 53 प्रतिशत अंक हैं। इस तरह वर्ष 2016 की परीक्षा के मुकाबले वर्ष 2018 की परीक्षा में टॉपर अभ्यर्थियों के अंकों में थोड़ी वृद्धि हुई है जो उस परीक्षा वर्ष के विभिन्न घटकों पर निर्भर करता है। इस परीक्षा की मेरिट में टॉपर 20-25 अभ्यर्थियों के अंकों में ज्यादा अंतर होता है लेकिन बाद में एक ही अंक पर कई अभ्यर्थी होते हैं। एक-एक अंक से मेरिट में बहुत ज्यादा अंतर आ जाता है। इसलिए इन परीक्षाओं में टॉप मेरिट से राज्य सेवाओं में चयन के इच्छुक अभ्यर्थियों को इन टॉपर्स के अंकों के आधार पर अपना टारगेट तय करना चाहिए। पिछली परीक्षाओं में प्रश्नपत्रवार प्राप्त अंकों का विश्लेषण किया जाने पर पाया गया कि सामान्य ज्ञान के प्रथम तीन प्रश्नपत्र में अधिकतर अभ्यर्थियों के 90 से 110 के बीच अंक हैं एवं चतुर्थ प्रश्नपत्र में औसत अंक 120 या इससे अधिक हैं। प्रश्नपत्रवार अंकों के इस औसत वाले अभ्यर्थियों के चयन की प्रबल संभावना होती है। इस परीक्षा की तैयारी कर रहें अभ्यर्थियों को हमारी सलाह है कि वे चारों प्रश्नपत्र की तैयारी इन औसत अंकों को लक्ष्य बनाकर करें ताकि उनकी सफलता की ज्यादा संभावना रहेगी।

इस आधार पर कहा जा सकता है कि सामान्यतः सामान्य, ओबीसी, एमबीसी, ई.डब्ल्यू.एस. के अभ्यर्थी को इस परीक्षा के माध्यम से राज्य सेवा में चयनित होने के लिए लिखित परीक्षा में लगभग 47%-55% के बीच अंक लाने का लक्ष्य तय किया जाकर तदनुरूप तैयारी करनी चाहिए। एस.सी. एवं एस.टी. वर्ग के अभ्यर्थियों को लगभग 45%या अधिक अंक लाने का लक्ष्य रखना चाहिए। क्षेत्रीय आरक्षण वाले अभ्यर्थियों का पदों की संख्या के अनुरूप इसी मेरिट में समावेश हो जाता है। यद्यपि इस परीक्षा में कुल पद, उनमें से राज्यसेवा एवं अधीनस्थ सेवा के अनुसार पद, वर्गवार वर्टिकल एवं होरीजॉन्टल रिजर्वेशन, उस परीक्षा वर्ष में प्रश्नपत्र का स्तर एवं मूल्यांकन पद्धति आदि कई कारणों से मेरिट व कटऑफ प्रभावित होती हैं लेकिन उपर्युक्त आंकड़े से तैयारी करने वाले अभ्यर्थी को अपने लक्ष्य का अनुमान हो जाता है वहीं उन्हें यह भी आभास रहें कि यहाँ डिग्री कोर्स की तरह उदारमन से मूल्यांकन न होकर सापेक्ष रूप से कई आयामों को ध्यान में रखकर कठोर मूल्यांकन किया जाता है ताकि योग्य में से योग्यतम का चयन आसानी से किया जा सके।

(2) यदि आप पहली बार परीक्षा दे रहें हैं तो ये लक्ष्य आपके लिए बहुत ही सहायक सिद्ध होंगे लेकिन आपने पूर्व में एक-दो बार परीक्षा दी है एवं असफल रहें हैं तथा अपनी मेरिट सुधारना चाहते हो तो अब अपनी पिछली मुख्य परीक्षा की अंक तालिका ही आपके लिए श्रेष्ठ मार्गदर्शक है क्योंकि आपको उक्त परीक्षा में चयनित अभ्यर्थियों

के अंक एवं स्वयं के अंक का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए जिन विषयों में आपके कम अंक आए हैं उनमें रही कमियों को सुधार कर उनमें अधिक अंक लाने हैं। वहीं जिन विषयों में अच्छे अंक आए हैं उनका स्तर भी अगली बार बरकरार रखना है। उनकी भी उतनी ही तैयारी निरंतर करनी है अन्यथा कई बार उस प्रश्न पत्र के संबंध में अति आत्मविश्वास के कारण निरंतर अपडेट नहीं रहते हैं एवं अगली परीक्षा में कमजोर प्रश्नपत्र में सुधार कर देते हैं लेकिन पिछली बार अच्छे अंक वाले विषय में अगली बार कम अंक आते हैं। औसतन कुल उतने ही अंक लाकर हम वहीं रह जाते हैं। इसलिए समग्र रणनीति से तैयारी करनी चाहिए।

(3) **मुख्य परीक्षा हेतु लेखन शैली में सुधार—** मुख्य परीक्षा में अंक कई आयामों से प्रभावित होते हैं लेकिन यदि आपकी विषयवस्तु पर अच्छी पकड़ है, आपकी विवेचनात्मक क्षमता संतुलित व निष्पक्ष है तथा आप की लेखन एवं अभिव्यक्ति शैली सरल, प्रवाहमयी व शुद्धियुक्त है तो अच्छे अंक अवश्य ही प्राप्त होते हैं। मुख्य परीक्षा के उत्तर एवं मूल्यांकन की तुलना किसी भोज एवं भोजन करने वाले (मेहमान) एवं भोजन करवाने वाले (आयोजक—परोसने वालों) से की जा सकती है। मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले अधिकतर अभ्यर्थियों की तैयारी एवं विषयों के सम्बन्ध में ज्ञान, समझ एवं विवेचना का स्तर भी अच्छा एवं समान औसत का होता है। सभी परीक्षार्थी कमोवेश थोड़े अंतर के अलावा उन्हीं पुस्तकों का अध्ययन करते हैं लेकिन जिस तरह सफल आयोजन वाले किसी भोज में बहुत ही बुद्धिमता, व्यवहारकुशलता एवं सम्प्रेषण शैली से भोजन परोसने वाले मेहमानों का दिल जीत लेते हैं क्योंकि वे जिस सामग्री की, जिसे जितनी जरूरत है उतनी भोजन सामग्री बहुत ही अच्छे सलीके से परोसते हैं जिससे मेहमान खुश हो जाते हैं। वही भोजन सामग्री अन्य भोज में बिना किसी सफल प्रबंधन के मेहमानों को पूछे बिना ही किसी को कुछ आइटम कम, किसी को ज्यादा किसी को बिल्कुल नहीं, किसी को इच्छानुसार परोस देते हैं। किसी मेहमान से निरंतर सम्प्रेषण या किसी से संवाद ही नहीं करते हैं। वे मेहमानों का ना तो दिल जीत सकते हैं एवं ना ही वह सफल आयोजन हो सकता है। इसी तरह सफल आयोजक की तरह जो परीक्षार्थी मुख्य परीक्षा में अलग-अलग प्रकार के प्रश्नों में निर्धारित शब्द सीमा में जो उत्तर चाहा गया है वह अपनी बुद्धिमता एवं विश्लेषण कौशल से सरल, स्निग्ध, भाषा शैली में अधिक से अधिक उत्तर सामग्री लिखता है या यो कहें अपने प्रस्तुतीकरण से परीक्षक को संतुष्ट कर देता है उसे अच्छे अंक जरूर मिलते हैं जबकि दूसरे आयोजक की तरह जो परीक्षार्थी या तो पूछे गए प्रश्न की शब्द सीमा का ध्यान रखे बिना चाही गई उत्तर सामग्री से कुछ अलग या तो बहुत लम्बा उत्तर या बहुत संक्षिप्त उत्तर या तो विषय वस्तु से असम्बद्ध या कुछ अंश तक संबद्ध उत्तर लिखता है। लेखन शैली में अत्यधिक क्लिष्ट शब्दों का प्रयोग करता है। वर्तनी अशुद्धि तथा उत्तर सामग्री के वाक्यों में तारतम्यता, सम्बद्धता एवं प्रवाह की कमी होती है तो परीक्षक उसके उत्तर से आयोग की मंशा के अनुरूप संतुष्ट नहीं हो पाते हैं तथा आशानुरूप अंक नहीं मिलने से वे बार-बार असफल होते हैं इसलिए उत्तर सामग्री एवं लेखन शैली ही महत्वपूर्ण है। अधिक से अधिक अभ्यास एवं मूल्यांकन प्रक्रिया से इसमें सुधार करना चाहिए।

जो ऊँची एवं लम्बी छलौंग लगाना चाहता है, उसे लम्बा दौड़ना होगा।

3.5 मुख्य परीक्षा हेतु प्रश्नपत्र वार तैयारी हेतु ध्यान रखने योग्य बिन्दु

मुख्य परीक्षा में चार अनिवार्य प्रश्नपत्र होते हैं जिनके प्रश्नपत्र प्रारूप एवं पद्धति के बारे में पूर्व में बताया जा चुका है। इन चारों प्रश्नपत्र के बारे में तैयारी हेतु कुछ ध्यान रखने योग्य बातें इस प्रकार हैं।

3.5.1 प्रथम प्रश्नपत्र—सामान्य ज्ञान एवं सामान्य अध्ययन

यूनिट—I इतिहास —

खण्ड—अ— राजस्थान का इतिहास कला, संस्कृति, साहित्य परम्परा और धरोहर

i. पाठ्यक्रम

- ❖ प्रागैतिहासिक काल से 18 वीं शताब्दी के अवसान तक राजस्थान के इतिहास के प्रमुख सोपान, महत्वपूर्ण राजवंश, उनकी प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था, 19वीं–20वीं शताब्दी की प्रमुख घटनाएँ : किसान एवं जनजाति आंदोलन, राजनीतिक जागृति, स्वतंत्रता संग्राम और एकीकरण, राजस्थान की धरोहर — प्रदर्शन एवं ललित कलाएँ, हस्तशिल्प एवं वास्तुशिल्प, मेले, पर्व, लोक संगीत एवं लोक नृत्य, राजस्थानी साहित्य की महत्वपूर्ण कृतियाँ एवं राजस्थान की बोलियाँ, राजस्थान के संत, लोक देवता और महत्वपूर्ण विभूतियाँ

ii. **अध्ययन सामग्री एवं तैयारी**—प्रथम इकाई में राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति के पाठ्यक्रम की तैयारी प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा दोनों ही दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है इसलिए पैनोरमा या लक्ष्य राजस्थान में से कोई एक पुस्तक से इन टॉपिक का अध्ययन करते हुए समझने के बाद समय हो तो नोट्स तैयार कर लें। यदि इससे आगे भी पढ़ना चाहते हैं तो राजस्थान इतिहास के लिए गोपीनाथ शर्मा की पुस्तक तथा राजस्थान की कला एवं संस्कृति के लिए हुकुमचन्द जैन एवं नारायण माली की पुस्तक पढ़ सकते हैं जिनसे इतिहास एवं संस्कृति का विवेचनात्मक पक्ष अच्छी तरह समझ आ जाएगा। राजस्थान के सामान्य ज्ञान के इस भाग का अध्ययन करते समय राजस्थान के इतिहास के घटनाचक्र क्षेत्र एवं राजवंश के मुताबिक इतिहास को सरसरी तौर पर समझकर इन राजवंशों एवं रियासतों की सांस्कृतिक, साहित्यिक सामग्री विरासत आदि को अच्छी तरह तैयार करें। राजस्थान की कला एवं संस्कृति, विशेषतः आदिवासी लोक संस्कृति का भली भाँति अध्ययन करें। इसके लिए राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की राजस्थान अध्ययन कक्षा 9वीं से 12वीं तक में से पाठ्यक्रम के टॉपिक को पढ़कर नवीन तथ्य अपने नोट्स में जोड़ सकते हैं। इस भाग से अब तथ्यात्मक प्रश्नों के साथ-साथ विश्लेषणात्मक प्रश्न भी पूछे जाने लगे हैं इसलिए तथ्य के साथ-साथ विषय वस्तु की समझ भी विकसित करें। पिछले वर्षों के प्रश्नों के अवलोकन से यह बात और स्पष्ट हो जाएगी।

iii. **पिछले वर्षों के प्रश्न—**

- नाथद्वारा चित्रकला की विशेषताएँ, जयपुर प्रजामण्डल का भारत छोड़ो आंदोलन के प्रति दृष्टिकोण, रणथम्भौर दुर्ग का सैन्य महत्व, मालदेव के हुमायूँ व शेरशाह के साथ संबंधों की आलोचनात्मक विवेचना—(मु0 प0 2013),
- मेवाड़ पुकार, मिरातुल अखबार, कला एवं साहित्य के क्षेत्र में सवाई जयसिंह का योगदान, 20वीं सदी के प्रारम्भ में राजस्थान में राजनैतिक जागरण के कारणों का वर्णन—(मु0 प0 2016),
- विश्ववल्लभ ग्रन्थ, डूंगजी—जवारजी, मोलेला कलाकारों द्वारा टेराकोटा वस्तुओं के निर्माण की विधि, राजस्थान के जागीरदारी क्षेत्रों में कृषक असंतोष के कारण की विवेचना, राजस्थान के पुरातात्विक स्थल बागोर, कालीबंगा, आहड़—(मु0 प0 2018), इस तरह उपर्युक्त प्रश्नों के अवलोकन से लगता है कि अब आर0पी0एस0सी भी राजस्थान के इतिहास, कला, संस्कृति व धरोहर संबंधी विवेचनायुक्त प्रश्न पूछने लगी हैं इसलिए अभ्यर्थी को इस नजरिए से भी तैयारी करनी चाहिए।
- रावणहत्या क्या है।, मन्दिर वास्तुकला में राजसिंह शैली की विशेषताओं की परीक्षण कीजिए।, एकीकृत राजस्थान में सिरोही के विलय पर संक्षिप्त लेख लिखें, राजस्थान के बेगू किसान आन्दोलन का आलोचनात्मक परीक्षण करें।, राजस्थान के शास्त्रीय साहित्य में चारण साहित्य की महता का परीक्षण करें।(मु0 प0 2021),

खण्ड—ब —भारतीय इतिहास एवं संस्कृति

i. पाठ्यक्रम

- ❖ भारतीय धरोहर—सिंधु सभ्यता से लेकर ब्रिटिश काल तक के भारत की ललित कलाएँ, प्रदर्शन कलाएँ, वास्तु परम्परा एवं साहित्य, प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत के धार्मिक आंदोलन एवं धर्म दर्शन, 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ से 1965 ईस्वी तक आधुनिक भारत का इतिहास—महत्वपूर्ण घटनाक्रम, व्यक्तित्व और मुद्दे, भारत का राष्ट्रीय आंदोलन— इसके विभिन्न चरण एवं धाराएँ प्रमुख योगदानकर्ता और देश के भिन्न-भिन्न भागों से योगदान।
- ❖ 19वीं-20वीं शताब्दी में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन
- ❖ स्वतंत्रोत्तर सुदृढीकरण और पुनर्गठन—देशी रियासतों का विलय तथा राज्यों का भाषायी आधार पर पुनर्गठन।

ii. **अध्ययन सामग्री एवं तैयारी**— भारत के प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास में से केवल भारतीय धरोहर, ललित कलाएँ, प्रदर्शन कलाएँ, वास्तु परम्परा एवं साहित्य प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत के धार्मिक आंदोलन एवं धर्म दर्शन पाठ्यक्रम में हैं। राजवंश एवं समसामयिकी का ऐतिहासिक पक्ष पाठ्यक्रम में शामिल नहीं हैं इसलिए केवल इसी पक्ष को तैयार करने के लिए प्राचीन भारत के लिए रामशरण शर्मा (NCERT) की व मध्यकालीन भारत के लिए सतीश चन्द्र वर्मा की (NCERT) पुस्तक पढ़नी चाहिए। इस भाग से सीधे तथ्यात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं। आधुनिक भारत का इतिहास के पाठ्यक्रम में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन, सामाजिक धार्मिक आंदोलन एवं स्वतंत्रता के बाद एकीकरण एवं पुनर्गठन शामिल है। इस हेतु स्पेक्ट्रम या विपिन चन्द्र की पुस्तक पढ़नी चाहिए। इन पुस्तकों को आधुनिक इतिहास की विभिन्न घटनाओं, आन्दोलन आदि के उदय के कारण, विकास के चरण, परिणाम तथा इनमें विभिन्न शख्सियत जैसे राजाराम मोहनराय, विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाँधी आदि के योगदान को विभिन्न आयामों के दृष्टिकोण से लिखा गया है जिन्हें पढ़कर अभ्यर्थी आधुनिक इतिहास के किसी भी तरह के समालोचनात्मक या विवेचनात्मक प्रश्नों का उत्तर आसानी से दे सकेगा।

iii. **पिछले वर्षों के प्रश्न**—इस भाग में पिछले वर्षों में पूछे गए प्रश्न इस प्रकार हैं।

- अकबर के दीन ए इलाही की प्रकृति, आर्य समाज एवं रामकृष्ण मिशन की धार्मिक शिक्षाओं में अंतर, 1857 की प्रकृति की व्याख्या, प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक साहित्य पर निबंध—(मु0 प0 2013)
- सिन्धु घाटी सभ्यता की नर्तकी प्रतिमा की विशेषताएँ, मखलिपुत्र गौशाल, संस्कृत साहित्य के ऐतिहासिक नाटक, गंधार एवं मथुरा कला की शैलियों में अंतर, भारतीय संघ में हैदराबाद का विलय, गाँधीजी के द्वारा असहयोग आंदोलन शुरू करने के कारण, मुगल चित्रकला पर लेख, 1905 में बंगाल विभाजन क्यों किया गया—(मु0 प0 2016)(टी.एस.पी.)
- भारत में अनीश्वरवादी धार्मिक सम्प्रदाय, अकबर काल के दौरान दो फारसी ग्रन्थ, सीमांत गाँधी, मध्यकालीन भारत में निर्गुण भक्ति की समृद्ध परम्परा को स्पष्ट कीजिए, मुगल स्थापत्य कला में शाहजहाँ का योगदान, 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास का निर्णायक मोड़ था, महात्मा गाँधी के आगमन ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन को किस प्रकार जन आंदोलन बना दिया, भारतीय जागरण में स्वामी विवेकानन्द का विशिष्ट योगदान—(मु0 प0 2016)
- तीन ग्रंथों की प्रस्थानत्रयी, अर्जुन की तपस्या प्रतिमा, हड़प्पा स्थलों से प्राप्त कांस्य मूर्तियाँ, भारतेन्दु हरीशचन्द्र हिन्दी साहित्य के अग्रदूत थे, राष्ट्रीय एकता सुदृढ करने हेतु राज्य पुनर्गठन आयोग के सुझाव, 19वीं का शताब्दी भारतीय पुनर्जागरण पश्चिम की चुनौती एवं प्रेरणा का परिणाम था, 20वीं शताब्दी में भारतीय क्रांतिकारी स्वतंत्रता आंदोलन के विकास की रूपरेखा प्रस्तुत कीजिए— (मु0 प0 2018)
- भारतीय वैदिक दर्शन की परम्परागत (रूढ़िवादी) छः शाखाओं में से किन्हीं चार का नामोल्लेख कीजिए।, सुहरावर्दी—सूफी सिलसिला का वर्णन कीजिए।, भारत छोड़ो आन्दोलन में अरुणा आसफ अली की भूमिका पर प्रकाश डालिए।, 1857 के विद्रोह के समय बिहार में कवरसिंह की गतिविधियों पर प्रकाश डालिये।, भारत में थियोसोफिकल सोसायटी की विचारधारा के विकास में थियोसोफिस्ट के विचारों की संक्षेप में विवेचना कीजिए (मु0 प0 2021),

खण्ड—स—आधुनिक विश्व का इतिहास (1950 ईस्वी तक)

i. पाठ्यक्रम

- ❖ पुनर्जागरण और धर्म सुधार, अमेरिका स्वतंत्रता संग्राम, फ्रांसीसी क्रान्ति 1789 ईस्वी व औद्योगिक क्रान्ति, एशिया व अफ्रीका में साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद, विश्व युद्धों का प्रभाव,

ii. **अध्ययन सामग्री एवं तैयारी**— विश्व इतिहास के निर्धारित पाठ्यक्रम की तैयारी हेतु एनसीईआरटी की “समकालीन विश्व की राजनीति” पुस्तक से निर्धारित टॉपिक का अध्ययन करना चाहिए। वहीं प्रश्नोत्तर अभ्यास हेतु आधुनिक विश्व का इतिहास—एस.सी. विश्नोई पुस्तक पढ़ी जा सकती है।

iii. पिछले वर्षों के प्रश्न—

- वर्साय की संधि द्वितीय विश्व युद्ध के लिए उत्तरदायी थी—(मु0 प0 2013), यूरोप के पुनर्गठन पुनर्जागरण आंदोलन के उद्भव के कारण—(मु0 प0 2016), अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव—(मु0 प0 2018)
- लियोनार्डो द विंची ने अपना प्रसिद्ध चित्र 'द लास्ट सपर' कहाँ पर चित्रित किया था।, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान भारत में देशी उद्योगों के विकास की विवेचना करें।, अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के वैचारिक पृष्ठभूमि की विवेचना करें। औद्योगिक क्रान्ति न केवल एक प्रौद्योगिकी क्रान्ति थी, बल्कि एक सामाजिक-आर्थिक क्रान्ति भी थी, जिसने लोगों के उसके बाद रहने के ढंग को भी परिवर्तित कर दिया। विवेचना करें। (मु0 प0 2021)

यूनिट—II अर्थव्यवस्था (भारतीय अर्थव्यवस्था, वैश्विक अर्थव्यवस्था, राजस्थान की अर्थव्यवस्था)

1. खण्ड अ— भारतीय अर्थशास्त्र

i. पाठ्यक्रम

- ❖ कृषि—भारतीय कृषि में वृद्धि एवं उत्पादकता की प्रवृत्तियाँ। खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र और खाद्य प्रबंधन। कृषिगत सुधार और चुनौतियाँ, औद्योगिकी क्षेत्र की प्रवृत्तियाँ—औद्योगिक नीति एवं औद्योगिक वित्त। उदारीकरण, वैश्वीकरण, निजीकरण, और आर्थिक सुधार। अवसंरचना और आर्थिक वृद्धि, स्फीति, कीमतें और मांग/पूर्ति प्रबंधन, केन्द्र—राज्य वित्तिय संबंध और नवीनतम वित्त आयोग। राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन, अधिनियम और भारत में राजकोषीय सुधार, बजटीय प्रवृत्तियाँ और राजकोषीय नीति। भारत में कर सुधार। अनुदान—नकद हस्तान्तरण और अन्य संबंधित मुद्दे। राजस्व और व्यय की प्रवृत्तियाँ।
- ❖ आर्थिक गतिविधियों में सरकार की भूमिका। निजी, सार्वजनिक और मेरिट वस्तुएँ।
- ❖ सामाजिक क्षेत्र—गरीबी, बेरोजगारी और असमानता। स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा नीति। प्रभावी नियामक की समस्या। आर्थिक विकास में राज्य की भूमिका को पुनर्भाषित करना और रोजगार उन्मुख वृद्धि व्यूह रचना।
- पिछले वर्षों के प्रश्न— भारत में नव कौशल विकास कार्यक्रम, भारत की वैश्विक स्पर्द्धात्मकता में सुधार हेतु उपाय, मानव विकास सूचकांक के निरूपण हेतु आधारभूत संकेतक, भारत में सनराइज उद्योग, सांसद आदर्श ग्राम योजना, भारत की पंचवर्षीय योजनाओं में कृषि क्षेत्र की उपेक्षा का राज्यों की अर्थव्यवस्था पर दूरगामी प्रभाव पर टिप्पणी, भारत सरकार की जनधन योजना की विशेषताएँ, बेटी बचाओ—बेटी पढ़ाओ अभियान का लिंगानुपात सुधार में योगदान, एक अर्थव्यवस्था के सामाजिक आर्थिक विकास हेतु वित्तीय समावेश जरूरी हैं पर टिप्पणी, भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए सड़क विकास का प्रभाव—(मु0 प0 2013)
- भारत के सन्दर्भ में खाद्य सुरक्षा, वित्तीय समावेशन, भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए चक्रव्यूह चुनौती पर टिप्पणी, स्टार्ट अप इंडिया, भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के उद्देश्य, ग्रीन फील्ड विदेशी प्रत्यक्ष निवेश एवं ब्राउन फील्ड विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में अन्तर, भारत सरकार की प्रत्यक्ष विदेशी विनियोग नीति के लक्षण, विश्व व्यापार संगठन के कृषि समझौते से भारत का कृषि क्षेत्र कैसे प्रभावित हुआ, क्या इससे भारत में टिकाऊ कृषि विकास होगा (मु0 प0 2018),
- 2017 में भारत में सर्वाधिक निर्यात होने वाले चार देशों के नाम घटते क्रम में लिखिए, राजकोषीय समेकन, ऋणात्मक ब्याज दर, भारत सरकार की भारतमाला परियोजना, भारत में उर्वरक अनुदानों के लिए प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण व्यवस्था, स्वचालित मार्ग तथा सरकारी मार्ग जिसके द्वारा भारत का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त करता है समझाइए, भारत में आधारभूत ढाँचे में निवेश की समस्याओं तथा भविष्य की आवश्यकताओं पर लेख, व्यवसाय सुगमता (Ease of Doing Business) विश्व बैंक द्वारा निर्धारित घटक बतलाइए। भारत की व्यवसाय सुगमता में रैंक बढ़ने वाले घटक हैं— (मु0 प0 2018)
- भारत में निवेश और वार्षिक बिक्री के आधार पर सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों को परिभाषित कीजियें।, देश के नवीन रोजगार सृजन के लिए प्रधान मंत्री रोजगार प्रोत्साहन योजना (पी.एम.आर.पी.वाई) के अन्तर्गत नियोक्ताओं को क्या प्रोत्साहन। विश्व बैंक समूह के जलवायु परिवर्तन पर कार्य योजना 2021–25 के किन्हीं पाँच लक्ष्यों को लिखिये।, भारत में कौनसे आठ मूल उद्योग आधारभूत संरचना को सहयोग करते हैं।, भारतीय बजट में राजस्व व्यय की मुख्य मदों को लिखिए, सतत् विकास को परिभाषित कीजिए।(मु0 प0 2021)

खण्ड ब—वैश्विक अर्थव्यवस्था

- ❖ वैश्विक आर्थिक मुद्दे और प्रवृत्तियाँ : विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन की भूमिका।
- ❖ सतत् विकास एवं जलवायु परिवर्तन।

ii. **अध्ययन सामग्री एवं तैयारी—** इसकी प्री की तैयारी के लिए परीक्षावाणी की पुस्तक ठीक है वहीं विषयवस्तु की समझ के लिए एनसीईआरटी की कक्षा 11वीं एवं 12वीं की अर्थशास्त्र में संबंधित टॉपिक का अध्ययन किया जा सकता है। अभ्यर्थी चाहे तो भारतीय अर्थव्यवस्था की रमेश सिंह की पुस्तक का अध्ययन कर सकता है परन्तु इसे एक-दो बार पढ़कर पाठ्यक्रम के टॉपिक के अपने नोट्स बनाना उचित रहेगा। परीक्षा वर्ष के भारत सरकार की आर्थिक समीक्षा एवं बजट सार को पढ़कर पाठ्यक्रम पाठों के नोट्स जरूर बनाने चाहिए। इस भाग में पूछे जाने वाले अधिकतर प्रश्न समसामयिकी अर्थव्यवस्था से जुड़े रहते हैं इसलिए समकालीन अर्थव्यवस्था के मुद्दों को भी समाचार पत्र एवं मासिक पत्रिकाओं से अपडेट करना चाहिए। किसी भी प्रश्न के उत्तर में नवीनतम अपडेशन के समावेश से उत्तर प्रभावी बनता है इसलिए समसामयिकी में आर्थिक मुद्दों, घटनाओं एवं अवस्थिति का जरूर अध्ययन करना चाहिए तथा अपने उत्तर में तथ्य, चार्ट या ग्राफ बनाकर इन्हें जरूर शामिल करना चाहिए। इस इकाई के प्रश्नों के स्वरूप को समझने के लिए पूर्व के वर्षों के प्रश्नों का अवलोकन करना चाहिए।

iii. पिछले वर्षों के प्रश्न—

- भारत की वैश्विक स्पर्द्धात्मकता में सुधार हेतु उपाय, ग्रीन फील्ड विदेशी प्रत्यक्ष निवेश एवं ब्राउन फील्ड विदेशी प्रत्यक्ष निवेश में अन्तर, विश्व व्यापार संगठन के कृषि समझौते से भारत का कृषि क्षेत्र कैसे प्रभावित हुआ, क्या इससे भारत में टिकाऊ कृषि विकास होगा (मु0 प0 2018), व्यवसाय सुगमता (Ease of Doing Business) विश्व बैंक द्वारा निर्धारित घटक बतलाइए। भारत की व्यवसाय सुगमता में रैंक बढ़ने वाले घटक हैं— (मु0 प0 2018)
- विश्व बैंक समूह के जलवायु परिवर्तन पर कार्य योजना 2021–25 के किन्हीं पाँच लक्ष्यों को लिखिये। (मु0 प0 2021)

खण्ड—स राजस्थान की अर्थव्यवस्था

(i) पाठ्यक्रम

- ❖ कृषि परिदृश्य—उत्पादन एवं उत्पादकता। जल संसाधन और सिंचाई। कृषि विपणन। डेयरी एवं पशुपालन।
- ❖ ग्रामीण विकास और ग्रामीण अवसंरचना। पंचायती राज और राज्य वित्त आयोग।
- ❖ औद्योगिक विकास का संस्थागत ढाँचा। औद्योगिक वृद्धि और नवप्रवृत्तियाँ। खादी और ग्रामोद्योग।
- ❖ अवसंरचना विकास— विद्युत और परिवहन। अवसंरचना में नीजि विनियोग और सार्वजनिक—नीजि सहभागिता परियोजनाएं—दृष्टिकोण और संभावनाएं।
- ❖ राजस्थान की प्रमुख विकास परियोजनाएं। राज्य बजट और राजकोषीय प्रबंधन—मुद्दे और चुनौतियाँ।
- ❖ राजस्थान की आर्थिक कल्याण योजनाएं। सामाजिक न्याय सशक्तिकरण।
- ❖ बुनियादी सामाजिक सेवाएं—शिक्षा व स्वास्थ्य। गरीबी, बेरोजगारी और सतत विकास लक्ष्य।

(ii) **अध्ययन सामग्री एवं तैयारी—**यह अंश पैनोरमा या लक्ष्य राजस्थान में से किसी एक पुस्तक से ही तैयार किया जा सकता है। पाठ्यक्रम के बिन्दुओं का इनमें से किसी एक पुस्तक से अध्ययन करने के बाद राजस्थान के करंट वर्ष की एवं विशेषतः परीक्षा वर्ष की आर्थिक समीक्षा एवं बजट सार से पाठ्यक्रम संबंधी नीतियों, योजनाओं, परियोजनाओं आदि की प्रगति के तथ्यों को नोट्स में अपडेट कर दे। इस भाग में राजस्थान सरकार की नीतियों, योजनाओं, परियोजनाओं तथा आर्थिक समस्याओं व समाधान संबंधी प्रश्न पूछे जाते हैं इसलिए राजस्थान की उद्योग एवं निवेश नीति, लघु उद्योग नीति, कृषि एवं प्रसंस्करण नीति एवं इन क्षेत्रों से संबंधित कल्याण योजनाओं, विकास परियोजनाओं, सार्वजनिक निजी भागीदारी की परियोजनाओं आदि का अध्ययन करना चाहिए।

(iii). **पिछले वर्षों के प्रश्न—**इस भाग से संबंधित प्रश्नों से इस भाग को और अधिक समझा जा सकता है।

- राजस्थान में विनिर्माण क्षेत्र के विकास हेतु प्रयुक्त रणनीति का आलोचनात्मक परीक्षण—(मु0 प0 2013)
- राजस्थान में सार्वजनिक— निजी सहभागिता के चार लाभ, रिसर्जेन्ट राजस्थान सहभागिता सम्मेलन 2015 पर टिप्पणी, राजस्थान सरकार द्वारा श्रमिकों के कौशल में सुधार हेतु किए गए उपायों का वर्णन—(मु0 प0 2016)
- राजस्थान में यंग इंटर्न कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य, राजस्थान में मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान के प्रमुख बिन्दु, राजस्थान राज्य में स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार हेतु सरकार द्वारा उठाए गए छह प्रमुख कदमों (उपाय) के नाम, पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना पर टिप्पणी—(मु0 प0 2018)
- राजस्थान में जैव ईंधन (बायोमास) ऊर्जा के मुख्य स्रोत क्या है।(मु0 प0 2021), राजस्थान में महिला सशक्तिकरण के लिए मुख्यमंत्री के सात सूत्र कार्यक्रम का वर्णन कीजिए।, राजस्थान सौर उर्जा नीति 2019 की दृष्टि एवं प्रमुख उद्देश्यों को लिखिये।, राजस्थान कृषि प्रतिस्पर्द्धा का उद्देश्य और इसको वित्त

पोषित करने वाली संस्था का नाम लिखिए, राजस्थान की समर्थ योजना के क्या उद्देश्य हैं।, राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना 2019 की मुख्य विशेषताएँ (मु0 प0 2021)

यूनिट-III समाज शास्त्र, प्रबंधन एवं लेखांकन एवं अंकगण

खण्ड-अ- समाज शास्त्र

i. पाठ्यक्रम

- ❖ भारतीय समाज में जाति और वर्ग : प्रकृति, उद्भव, प्रकार्य और चुनौतियाँ, परिवर्तन की प्रक्रियाएँ : संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, लौकिकीकरण, भूमण्डलीकरण, **भारतीय समाज के समक्ष चुनौतियाँ** : दहेज, तलाक एवं बाल विवाह के मुद्दे, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, निर्धनता, बेरोजगारी, मादक पदार्थ व्यसन, कमजोर तबके विशेषकर दलित, वृद्ध और दिव्यांग, राजस्थान के जनजातीय समुदाय—भील, मीणा एवं गरासिया।
- ii. **अध्ययन सामग्री एवं तैयारी**— समाज शास्त्र की एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 11वीं एवं 12वीं की पुस्तकों से तैयारी की जानी चाहिए जो टॉपिक इन पुस्तकों में शामिल नहीं है, उन्हें समाज शास्त्र की मा. शि. बोर्ड की पुस्तक या अन्य स्तरीय पुस्तक या ऑनलाइन सामग्री एकत्र कर तैयार किया जाना उचित रहेगा। राजस्थान से संबंधित पाठ राजस्थान के सामान्य ज्ञान की पुस्तक से ही तैयार किया जा सकता है जिसमें राजस्थान की जनजातियों के बारे में विशेष अध्ययन किया जाना ठीक रहेगा।

iii. पिछले वर्षों के प्रश्न—

- असंस्कृतीकरण एवं सीमन्तोन्नयन संस्कार पर टिप्पणी, जाति एक अन्तर्विवाही समूह है के लिए सामाजिक विचारधारा, सागड़ी प्रथा निषेध अधिनियम, लौकिकीकरण ने धर्म में क्या परिवर्तन किए हैं, राजस्थान की जनजातियों की समस्याओं के समाधान हेतु संवैधानिक प्रयास बताइए —(मु0 प0 2018)
- शारदा एक्ट क्या है।, जाति व्यवस्था असमानता का उदाहरण क्यों, वैश्विक गांव क्या है।, राजनीतिक भ्रष्टाचार को परिभाषित कीजिए।, राजस्थान में वृद्धावस्था की पात्रता क्या है।, एन.एन.श्री निवास द्वारा प्रभूजाति को स्पष्ट करने हेतु कौनसे लक्षण बताए गए हैं।, राजस्थान की जनजातिय समुदाय की प्रमुख पांच समस्याएँ।(मु0 प0 2021)

खण्ड-ब प्रबंधन

i. पाठ्यक्रम

- ❖ विपणन की आधुनिक अवधारणा, विपणन मिश्रण—उत्पाद मूल्य, स्थान और संवर्धन। आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, प्रचालन तंत्र की इ— वाणिज्य, इ—विपणन, व्यवसाय तथा निगम आचारनीति।
- ❖ धन के अधिकतमकरण की अवधारणा, वित्त के स्रोत—छोटी और लम्बी अवधि, पूँजी संरचना, पूँजी की लागत, लाभों का विभाजन, बैंकिंग और गैर बैंकिंग वित्तिय संस्थान, शेयर बाजार, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश, विदेशी संस्थागत निवेश।
- ❖ नेतृत्व के सिद्धान्त तथा शैलियाँ, समूह व्यवहार, व्यक्तिगत व्यवहार, अभिवृत्ति, मूल्य, टीम निर्माण, अभिप्रेरण के सिद्धान्त, संघर्ष—प्रबंधन, समय—प्रबंधन, तनाव—प्रबंधन, प्रशिक्षण, विकास तथा आकलन प्रणाली।
- ❖ उद्यमिता—उद्भव, स्टार्टअप्स, यूनिकॉर्न, उद्यम पूँजी, एंजल निवेशक।
- ❖ अत्यावश्यक सेवाओं का प्रबंधन— शिक्षा प्रबंधन, हेल्थकेयर तथा वेलनेस प्रबंधन, पर्यटन तथा आतिथ्य प्रबंधन।

- ii. **अध्ययन सामग्री एवं तैयारी**— प्रबंधन के पाठ्यक्रम की तैयारी वाणिज्य संकाय की एनसीईआरटी की व्यवसाय अध्ययन

भाग— I (कक्षा 11) एवं व्यवसाय अध्ययन भाग— II (कक्षा 12) से की जा सकती है यद्यपि रा.मा.शि.बोर्ड की व्यवसाय अध्ययन एवं एम. लक्ष्मीकांत की पुस्तक प्रबंध एवं प्रशासन से भी पढ़कर 2 अंक एवं 5 अंक योग्य प्रश्नों के नोट्स बनाना उचित रहेगा ताकि बार—बार रिवीजन से ये पाठयांश अच्छा तैयार हो सके।

- iii. **पिछले वर्षों के प्रश्न**— इसमें पूर्व के वर्षों में पूछे गए प्रश्न इस प्रकार हैं—निर्देशन की एकता का सिद्धान्त, अनौपचारिक संगठन का अर्थ, संधारणी या विपणन विचार, अल्पकालीन वित्त के उपकरण के रूप में व्यापारिक पेपर, संचार में अर्थपूर्ण बाधाएँ, अभिप्रेरण के द्विकारक सिद्धान्त, सम्पदा को अधिकतम करने की अवधारण—(मु0 प0 2018)

- स्टार्टअप इंडिया योजना का उद्देश्य क्या है।, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन को परिभाषित कीजिए, करिश्माई नेता की कोई चार विशेषताएँ, सेवाओं की कोई चार विशेषताओं को चिन्हांकित कीजिये।, भारत की दो प्रमुख स्टॉक इक्स्चेंजों के नाम, ए.एच. मास्लो के अनुसार आवश्यकता क्रमबद्धता सिद्धान्त की व्याख्या, किन्हीं दो चरणों की विशेषताओं के साथ उत्पाद जीवन चक्र का वर्णन—(मु0 प0 2021)

खण्ड—स लेखांकन एवं अंकेक्षण

i. पाठ्यक्रम

- ❖ लेखांकन की दोहरी लेखा प्रणाली का सामान्य ज्ञान, वित्तीय विवरण विश्लेषण की तकनीकें, उत्तरदायित्व और

सामाजिक लेखांकन, अंकेक्षण का अर्थ एवं उद्देश्य नियंत्रण, सामाजिक, निष्पत्ति एवं दक्षता अंकेक्षण, सरकारी

अंकेक्षण की प्रारम्भिक जानकारी, निष्पादन बजट एवं शून्य आधारित बजट की सामान्य जानकारी।

- ii. **अध्ययन सामग्री एवं तैयारी**—लेखांकन एवं अंकेक्षण के पाठ्यक्रम के अध्ययन हेतु एनसीईआरटी की लेखांकन कक्षा-12 से संबंधित पाठ पढ़कर अपने नोट्स बनाना उचित रहेगा। इसके अलावा ऑनलाइन या अन्य स्रोत से भी इस भाग की तैयारी की जा सकती है। इस भाग में भी लेखांकन एवं अंकेक्षण के विभिन्न आयामों पर तथ्याधारित प्रश्न ज्यादा पूछे जाते हैं जिन्हें पूर्व के वर्षों के प्रश्नपत्र में आए प्रश्नों तथा एनसीईआरटी की पुस्तक के पाठ के अन्त में पूछे गए प्रश्नों से तैयारी करने में सहायता मिलेगी।

iii. पिछले वर्षों के प्रश्न—

- पूँजी संरचना, अवधारणा में शुद्ध आय एवं शुद्ध संचालन आय के सिद्धान्त में भिन्नताएँ, परिचालन चक्र विधि, आंतरिक निरीक्षण एवं आंतरिक अंकेक्षण में अन्तर, बेलेंस शीट के दो बिन्दु, निपुणता अंकेक्षण एवं निष्पादन अंकेक्षण में अन्तर, परम्परागत बजट एवं शून्य आधारित बजट में अंतर, सामाजिक लेखांकन का अर्थ एवं विशेषताएँ, सामाजिक अंकेक्षण की महत्ता के पाँच बिन्दु—(मु0 प0 2016)
- कुशलता अंकेक्षण, बजटन, सामाजिक अंकेक्षण, कोष प्रवाह विश्लेषण तकनीक, शून्य आधार बजटन पर टिप्पणी, कार्यशील पूँजी की परिचालन चक्र अवधारणा—(मु0 प0 2018)
- मिश्रित जर्नल प्रविष्टियों क्या है।, प्रवृत्ति विश्लेषण की किन्हीं दो विधियों के नाम, उत्तरदायित्व लेखांकन के संदर्भ में चार उत्तरदायित्व केन्द्रों को बताइए।, सरकारी अंकेक्षण में सर्वोच्च पद पर आसीन व्यक्ति का पदनाम क्या है।, भारत सरकार द्वारा शून्य आधार बजटन क्यों अपनाया गया था।, उचित उदाहरण देते हुए लेखांकन की दोहरी प्रविष्टि प्रणाली के सन्दर्भ में द्वि-पक्ष अवधारणा को समझाइए।, निष्पादन बजटिंग सरकार व सार्वजनिक उपक्रमों के लिए उपयोगी है।” क्यों—(मु0 प0 2021)

“सफल होने का कोई राज नहीं है। यह आपके द्वारा की गई तैयारी, कठिन परिश्रम एवं असफलता से सीखने का प्रतिफल है।” – कोलिन पॉवेल

3.5.2 द्वितीय प्रश्नपत्र—सामान्य ज्ञान एवं सामान्य अध्ययन

यूनिट-1 प्रशासकीय नीतिशास्त्र

i. पाठ्यक्रम

- ❖ नीतिशास्त्र एवं मानवीय मूल्य—महापुरुषों, समाज सुधारकों तथा प्रशासकों के जीवन से प्राप्त शिक्षा। परिवार, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं का मानवीय मूल्यों के पोषण में योगदान।
- ❖ नैतिक सम्प्रत्यय—ऋत एवं ऋण, कर्तव्य की अवधारणा, शुभ एवं सद्गुण।
- ❖ निजी एवं सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र की भूमिका— प्रशासकों का आचरण, मूल्य एवं राजनैतिक अभिवृत्ति— सत्यनिष्ठा का दार्शनिक आधार।
- ❖ भगवद् गीता का नीतिशास्त्र एवं प्रशासन में इसकी भूमिका।
- ❖ गाँधी का नीतिशास्त्र।
- ❖ भारतीय एवं विश्व के नैतिक चिंतकों एवं दार्शनिकों का योगदान
- ❖ प्रशासन में नैतिक चिन्ता, द्वन्द्व एवं चुनौतियाँ।
- ❖ नैतिक निर्णय—प्रक्रिया तथा उसमें योगदान देने वाले कारक : सामाजिक न्याय, मानवीय चिन्ता, शासन में जवाबदेही एवं नैतिक आचार संहिता।
- ❖ उपरोक्त विषयों पर आधारित केस अध्ययन

ii. **अध्ययन सामग्री एवं तैयारी**—इसमें प्रशासनिक नीति शास्त्र एवं मानवीय मूल्य शामिल हैं। 2018 से पूर्व पाठ्यक्रम प्रशासनिक नीति शास्त्र से संबन्धित बहुत कम टॉपिक थे लेकिन 2018 में इस प्रश्न पत्र में से गणित एवं तार्किकता को हटाकर नीति शास्त्र का अंक भार एवं पाठ्यक्रम बढ़ाया गया है। यह विषय सिविल सेवा परीक्षा (मुख्य परीक्षा) में भी है लेकिन आर.ए.एस. में पाठ्यक्रम ज्यादा विस्तृत नहीं है। आर.ए.एस. परीक्षा में इस पाठ्यक्रम की तैयारी सिविल सेवा हेतु लिखी गई पुस्तक ‘नीति शास्त्र, सत्यनिष्ठा एवं अभिरुचि’ टी.एम. एच प्रकाशन या अरिहन्त प्रकाशन या कॉनिकल प्रकाशन की पुस्तक (The Lexicon) में से किसी एक पुस्तक से की जा सकती है। इस प्रश्न पत्र की तैयारी पाठ्यक्रम में निर्धारित नैतिक अवधारणाओं एवं इनसे संबंधित विचारकों को समझकर उनका प्रशासन एवं प्रशासक के लिए व्यावहारिक उपयोग करने तथा उसी के अनुरूप अपने विचार एवं दृष्टिकोण निर्माण करने का प्रयास करना चाहिए। आयोग द्वारा इन अवधारणाओं के व्यावहारिक उपयोग के सवाल ज्यादा पूछे जाते हैं। जब तक अभ्यर्थी इन अवधारणाओं के बारे में अपनी समझ विकसित नहीं करेगा तब तक इन प्रश्नों के प्रश्न पत्र निर्माता या आयोग की मंशा के अनुरूप उत्तर नहीं लिख पाएगा। पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद पूर्व के वर्षों के प्रश्न पत्र में आए प्रश्नों एवं अन्य सम्भावित प्रश्नों के उत्तर लिखकर उनका मूल्यांकन करवाना चाहिए। इस इकाई को पाठ्यक्रम में जोड़ने का उद्देश्य यह है प्रशासक बनने की चाह रखने वाले युवाओं की सच्चरित्रता एवं मानवीय मूल्यों का परीक्षण करना ताकि योग्य प्रशासक का चयन करने में सहायता मिले। इस इकाई से पूर्व के प्रश्न पत्र के प्रश्नों के अवलोकन से प्रश्नों की प्रकृति का पता लगाया जा सकता है।

iii. पिछले वर्षों के प्रश्न—

- सुकरात के अनुसार सद्गुण, गीता के अनुसार परधर्म, नैतिक अधिकारों एवं कानूनी अधिकारों में अन्तर, गीता की लोभ संग्रहण की अवधारणा, काट का भुभ संकल्प—(मु0 प0 2016)
- गीता में लोककल्याण का सिद्धांत, ऋतधारणा से प्रशासनिक उत्कृष्टता संवर्धन, प्लेटो का न्याय, अहिंसा गाँधी की नैतिकता का केन्द्रीय मूल्य है क्यों, राजनैतिक तटस्थता से सुशासन, प्रशासनिक अधिकारी के रूप में दुविधा के निराकरण में गीता के सिद्धांतों का प्रयोग, प्लेटो के न्याय सिद्धांत में साहस व संयम की समाज एवं प्रशासन में उपयोगिता व धारणा कांट के अनुसार नैतिकता की पूर्व मान्यताएँ, कांट के अनुसार निरपेक्ष आदेश, गीता के अनुसार स्वधर्म, प्लेटो के मुख्य सद्गुण, मिल का उपयोगितावाद—(मु0 प0 2016)
- प्रशासनिक कर्तव्य के निर्वहन में स्थित प्रज्ञ की संकल्पना की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।, बुद्ध की कौनसी शिक्षा आज सर्वाधिक प्रासंगिक है और क्यों, नैतिक द्वन्द्व से आप क्या समझते हैं।, प्रशासनिक जीवन में ऋण

के नैतिक आदर्श की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिए।, भगवद्गीता का अनसक्ति सिद्धान्त किस रूप में एक प्रशासक के जीवन में सार्थक है।—(मु0 प0 2021)

- मनुष्य के नैतिक उन्नति समाज की सर्वांगीण उन्नति पर निर्भर करती है।, परिवार मनुष्य के नैतिक विकास की सबसे महत्वपूर्ण संस्था है। इस कथन की समीक्षा कीजिए।, कांट किस प्रकार एवं निरपेक्ष आदेश के आधार पर अंतिम शुभ की व्याख्या करता है।, आमातौर पर एक स्वस्थ और उत्पादक जीवन जीने के लिए व्यक्ति की न्यूनतम बुनियादी जरूरतें क्या मानी गयी है। इन न्यूनतम को सुनिश्चित करने में एक प्रशासक की क्या जिम्मेदारी है।, लोक सेवा की उत्कृष्टता के लिए आवश्यक प्रमुख नैतिक मूल्य कौनसे है। (मु0 प0 2021)
- “अनिवार्यतः संबंधित होने के कारण साधनों को साध्य से पृथक नहीं किया जा सकता, अतः वास्तविक और स्थाई सफलता के लिए दोनों का शुभ होना आवश्यक है।” गाँधी नीतिशास्त्र के सन्दर्भ में उक्त टिप्पणी को स्पष्ट करें।, “नैतिक निर्णय” लेने में महत्वपूर्ण कारकों को समझाइए। यदि नैतिक निर्णय प्रशासनिक निर्णय के विरुद्ध हो, तो आप दोनों में किस प्रकार समन्वय करेंगे। सोदाहरण समझाइए।, एक दूसरे की सफलता बेहतर प्रशासन के लिए सीख देती है। इस कथन का विश्लेषण उदाहरणों द्वारा कीजिए। (मु0 प0 2021)

यूनिट- II सामान्य विज्ञान एवं तकनीकी

i. पाठ्यक्रम

- ❖ दैनिक जीवन में रसायन विज्ञान : द्रव्य की अवस्थाएं—परमाण्विक संरचना धातु, अधातु और उपधातु, धातुकर्म सिद्धान्त और विधियों, महत्वपूर्ण अयस्क और मिश्र—अम्ल, क्षार और लवण PH और बफर की अवधारणा— महत्वपूर्ण औषधियों (संश्लेषित और प्राकृतिक), एंटीऑक्सिडेंट, परिरक्षक, कीटनाशी, कवकनाशी, शाकनाशी, उर्वरक, योजक और मधुरक— कार्बन इसके यौगिक और उनके घरेलू और औद्योगिक अनुप्रयोग रेडियोधर्मिता— अवधारणाएं और अनुप्रयोग।
 - ❖ दैनिक जीवन में भौतिक — गुरुत्वाकर्षण, मानव नेत्र और दोष, ऊष्मा, स्थिर एवं धारा वैद्युतिकी, चुंबकत्व, वैद्युत चुंबकत्व, ध्वनि एवं विद्युत अनुनाद इमेजिंग और नाभिकीय चुम्बकीय अनुनाद—नाभिकीय विखंडन और संलयन।
 - ❖ कोशिका— मानव में नियंत्रण और समन्वय, प्रजनन, उत्सर्जन श्वसन, परिसंचरण और पाचन तंत्र, रक्त समूह, रक्त की संरचना और कार्य, हार्मोन आनुवंशिक एवं जीवन शैली के रोग, मानव रोग— संचारी और गैर—संचारी, एडेमिक, एपिडेमिक रोग—इनके निदान और नियंत्रण, प्रतिरक्षीकरण और टीकारण, ड्रग्स एवं एल्कोहॉल का दुरुपयोग, पादप के भाग और उनके कार्य, पादपों में पोषण, पादप वृद्धि नियंत्रक, पादपों में लैंगिक और अलैंगिक प्रजनन, राजस्थान के विशेष संदर्भ में महत्वपूर्ण औषधीय पौधे, जैविक खेती, जैव प्रौद्योगिकी और उसके अनुप्रयोग।
 - ❖ आधारभूत कम्प्यूटर विज्ञान : नेटवर्किंग और प्रकार, एनालॉग और डिजिटल दूरसंचार, आवृत्ति स्पेक्ट्रम, मोबाइल टेलीफोनी, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी में नूतन विकास—आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, बिग डेटा, क्लाउड कम्प्यूटिंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, क्रिप्टो करेंसी, ओटीटी प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया और उनके प्रभाव, भारत में आईटी उद्योग डिजिटल इंडिया पहल।
 - ❖ विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी में भारतीय वैज्ञानिकों का योगदान, वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति—रोबोटिक्स, मशीन लर्निंग, ऑगमेंटेड रियलिटी, नैनो प्रौद्योगिकी, आरएफआईडी, क्वांटम कम्प्यूटिंग आदि : राजस्थान में विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास, विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित सरकार की नीतियाँ।
 - ❖ अंतरिक्ष प्रौद्योगिक—भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम, उपग्रह और उनकी कक्षाएँ, विभिन्न प्रक्षेपण यान, सुदूर संवेदन।
 - ❖ रक्षा प्रौद्योगिकी—मिसाइलें, भारतीय मिसाइल कार्यक्रम, रासायनिक और जैविक हथियार।
- ii. **अध्ययन सामग्री एवं तैयारी**— विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी प्रारम्भिक एवं मुख्य दोनों परीक्षाओं में शामिल है इसलिए दोनों दृष्टिकोण से तैयारी हेतु एन.सी.आर.टी. की कक्षा 6 से 10 वीं की विज्ञान की पुस्तकों में से पाठ्यक्रम में निर्धारित टॉपिक तथा कक्षा 11वीं एवं कक्षा 12वीं की विज्ञान की पुस्तकों में से कुछ टॉपिक पढ़ सकते हैं। इसके अलावा दृष्टि प्रकाशन, टी.एम.एच. प्रकाशन की विज्ञान एवं तकनीकी की कोई एक पुस्तक से भी से पढ़े जा सकते हैं।
- iii. **पिछले वर्षों के प्रश्न**—इस इकाई में सीधे तथ्यात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं। जैसे—
- क्वांटम बिन्दु, क्लोनिंग एवं उपयोग, समस्थानिक, अम्लीय वर्षा, ग्रीन हाउस गैस, नैनोकण की उपयोगिता, विटामिन ए के स्रोत एवं कमी से होने वाले रोग, रक्तदाब की परास एवं मापन, जैवविविधता, आनुवंशिक

परिवर्द्धित फसलें तथा भारतीय कृषि एवं उद्यानिकी से सम्बन्धित उपयुक्त उदाहरण, विधि विज्ञान में नार्को टेस्ट, मस्तिष्क मानचित्र एवं डी.एन.ए. बारकोड की महत्ता एवं सीमितताएँ—(मु0 प0 2013)

- ग्रहीय गति का केपलर नियम, आनुवांिक अभियांत्रिकी, इंसुलिन, ठोस का बद्ध सिद्धांत, मानव के गुणसूत्री विकार के प्रकार, कारण एवं लक्ष्य—(मु0 प0 2016)
- एनालोग एवं डिजीटल संकेत, साबुन व अपमार्जक में अंतर, बहुलक की परिभाषा एवं जैव बहुलक के उदाहरण, उपार्जित प्रतिरक्षा एवं उसके प्रकार, भारत में नैनो मिान के उद्देश्य, संक्रमणीय बीमारियों के कारण खाद्य परिरक्षण के सिद्धांत एवं विधियाँ—(मु0 प0 2018)
- नाभिकिया विखण्डन एवं संलयन को विभेदिन कीजिए।, फलों को कृत्रिम रूप से पकाने में कैल्शियम कार्बाइड की भूमिका स्पष्ट कीजिये।, ओ.टी.टी. प्लेटफॉर्म क्या है।, आर.एफ.आई.डी. प्रचालन का मूल सिद्धान्त क्या है। इस तकनीकी के दो उपयोग दीजिए।, ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान और भूस्थिर उपग्रह प्रक्षेपण यान में क्या अन्तर है। (मु0 प0 2021)
- औषधीय पौधे—गुडूची/गिलोय, के कोई पाँच लाभ लिखिए।, क्रिप्टोकरेंसी क्या है। इसके फायदे और नुकसान क्या है।, पिछली पीढ़ियों के मोबाइल नेटवर्क और 5जी नेटवर्क में क्या अन्तर है।, मिसाइल और सामरिक प्रणाली (एम.एस.एस) का उद्देश्य लिखिए। एम.एस.एस. कलस्टर में शामिल प्रयोगशालाओं के नाम, कार्बन का कौनसा गुण बड़ी संख्या में यौगिकों के निर्माण के लिए उत्तरदायी है।
 - कार्बन यौगिकों के घरेलू और औद्योगिक अनुप्रयोग लिखिए।
 - प्रत्येक के उदाहरण दीजिये।
- 1. कृत्रिम मधुरक 2. खाद्य संरक्षक 3. जिंक के अयस्क
मानव की आंख कार्यप्रणाली का वर्णन करें और दृष्टि के किसी एक अपवर्तक दोष और उसके सुधारात्मक उपाय की व्याख्या करें।, रीयल टाईम पीसीआर की अवधारणा की व्याख्या करें। कोविड-19 के लिए आरटी पीसीआर टेस्ट में सिटी वैल्यू क्या है।, निम्नलिखित भारतीय वैज्ञानिकों के योगदान का उल्लेख करें— (मु0 प0 2021)

1. होमी जहाँगीर भाभा
2. सर मोक्षगुंडम विश्वश्वरैया
3. सत्येन्द्र नाथ बोस
4. मेघनाथ साहा
5. हर गोबिन्द खुराना

iv. **राजस्थान में विज्ञान तकनीकी** : इसी इकाई में राजस्थान राज्य में जैव विविधता एवं उसका संरक्षण, जल संरक्षण, राजस्थान में कृषि विज्ञान, वानिकी डेयरी एवं पशु को भी शामिल किया गया है। इनमें से कुछ टॉपिक राजस्थान के भूगोल एवं कृषि के अध्ययन के साथ तैयार करने होंगे। इसमें करंट विषयों से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं इसलिए राजस्थान सरकार की विभिन्न नीतियाँ यथा कृषि नीति, वन एवं पर्यावरण नीति, जल एवं जल संरक्षण नीति, नवीकरणीय ऊर्जा नीति, सूचना प्रौद्योगिकी नीति, राजस्थान बायोटेक नीति तथा इनसे संबंधित जन कल्याणकारी योजनाओं का सरकार के विभागीय पोर्टल या अन्य स्रोतों से जानकारी प्राप्त कर अध्ययन करना उचित रहेगा। इससे संबंधित निम्न प्रश्न पूर्व के वर्षों में पूछे गए हैं—

- v. **पिछले वर्षों के प्रश्न**—राजस्थान के सन्दर्भ में दो गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोतों का वर्णन—(मु0 प0 2013), राजस्थान सरकार के पशुपालन विभाग द्वारा चलाए जा रहे नस्ल सुधार कार्यक्रम—(मु0 प0 2016)
- मैसोजोइक युग की समय सीमा लिखिए, सियाल की संरचना के बारे में लिखिए, शिवालिक हिमालय का निर्माण कैसे हुआ।, पश्चिमी घाट की पर्वत श्रेणियाँ/पहाड़ियों के नाम लिखिए एवं राजस्थान के जस्ता उत्पादक क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए (मु0 प0 2021)
 - ज्वालामुखी की परिप्रशांत मेखला का वर्णन कीजिए।, राँकी पर्वत की भौगोलिक विशेषताओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।, भारत के उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वनों की भौगोलिक विशेषताओं का वर्णन, राजस्थान के हाड़ौती पठार की भौतिक विशेषताओं की विवेचना।, राजस्थान में प्रमुख धात्विक खनिजों के वितरण की संक्षेप में विवेचना (मु0 प0 2021)
 - दक्षिणी पूर्वी एशिया की भू-राजनीतिक समस्याओं की विवेचना।, राजस्थान में गैर-परम्परागत ऊर्जा के विकासका विवरण।, भू-धरोहर स्थल की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए तथा राजस्थान में इसकी संभाव्यता पर प्रकाश डालिए।(मु0 प0 2021)

यूनिट-III पृथ्वी विज्ञान (भूगोल एवं भू-विज्ञान)

खण्ड-अ-विश्व

i. पाठ्यक्रम

- ❖ प्रमुख भौतिक भू-आकृतियाँ : पर्वत, पठार, मैदान, झील एवं हिमनद, भूकम्प एवं ज्वालामुखी— प्रकार, वितरण एवं उनका प्रभाव, पृथ्वी एवं भूवैज्ञानिक समय सारणी, प्रमुख भू-राजनीतिक समस्याएँ, प्रमुख पर्यावरण संबंधी मुद्दे।

खण्ड-ब-भारत

- ❖ प्रमुख भौतिक-पर्वत, पठार, मैदान, झील एवं हिमनद, भारत के प्रमुख भू-आकृतिक प्रदेश
- ❖ जलवायु-मानसून की उत्पत्ति, ऋतुओं के अनुसार जलवायु दशाएँ, वर्षा का वितरण एवं जलवायु प्रदेश।
- ❖ प्राकृतिक संसाधन— (क) जल, वन एवं मृदा संसाधन (ख) शैल एवं खनिज—प्रकार एवं उनका उपयोग।
- ❖ जनसंख्या-वृद्धि, वितरण, घनत्व, लिंगानुपात, साक्षरता, नगरीय एवं ग्रामीण जनसंख्या।

ii. अध्ययन सामग्री एवं तैयारी— यह इकाई भी प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा दोनों के पाठ्यक्रम में है इसलिए इस इकाई की भी अच्छी तैयारी करनी चाहिए। इस इकाई के भाग 'अ' में वि.व. का भूगोल एवं भाग 'ब' में भारत का भूगोल है। इन दोनों भूगोल की तैयारी हेतु वि.व. एवं भारत का भूगोल-परीक्षावाणी प्रकाशन (प्री परीक्षा के लिए वि.व. शेष रूप से) या वि.व. एवं भारत का भूगोल एनसीईआरटी सार संग्रह कक्षा 6 से 12 महे. 1 कुमार वर्णवाल, इन दोनों में से कोई एक पुस्तक अध्ययन करना है। साथ ही महे. 1 कुमार वर्णवाल की वि.व. एवं भारत का भूगोल को मुख्य परीक्षा के दृष्टिकोण से पढ़ना है। यद्यपि एनसीईआरटी की कक्षा 11 एवं 12वीं की भूगोल में भी पाठ्यक्रम के अधिकतर टॉपिक शामिल हैं इसलिए उसे भी पढ़ा जा सकता है लेकिन उन्हें पढ़कर नोट्स बनाकर तैयारी करना उचित रहेगा। भूगोल के अध्ययन के दौरान ऑक्सफोर्ड के एटलस या अन्य किसी प्रकार के एटलस के सहयोग से अध्ययन करें। भूगोल में वि.व. लेशणात्मक एवं विवेचनात्मक प्रश्नों के बजाय अधिक तथ्यात्मक प्रश्न आयोग द्वारा पूछे जा रहे हैं इसलिए इस नजरिए से तैयारी करें।

iii. पिछले वर्षों के प्रश्न—

- भारत के बांगर-खादर में अंतर, भारत में पारिस्थितिकी संकट के कारण—(मु0 प0 2013)
- उल्का झीलें, अधिकेंद्र, भीतकालीन वर्षा क्षेत्र, उत्तरी अमेरिका की महान झीलों की अवस्थिति, नाम एवं महत्व, भारत की Bshw प्रकार की जलवायु, भारतीय मानसून पर ला-नीना का प्रभाव, भारत के तटीय मैदानों का उपविभागों में विभाजन एवं उनकी विशेषताएँ (मु0 प0 2016)
- सिण्डुर, भांकु ज्वालामुखी, मेसा, सहयाद्री, वलित पर्वत के उदाहरण एवं अवस्थिति, छोटा नागपुर के पठार का विस्तार एवं महत्व, वि.व. के भूकम्पों के विवरण, भारत में दक्कन ट्रेप के प्रमुख क्षेत्र, भूगर्भिक समय सारणी के मध्य जीवी महाकल्प की विशेषता, भूगर्भिक समय सारणी का विभाजन (मु0 प0 2016)
- पृथ्वी की सतह पर पेलिजोइक कल्प के महत्वपूर्ण विकास का विवेचन, भारत में वर्षा वितरण, पर्वतीय प्रभाव की विवेचना, छोटा नागपुर पठार का महत्व (मु0 प0 2018)
- मैसोजोइक युग की समय सीमा लिखिए, सियाल की संरचना के बारे में लिखिए, शिवालिक हिमालय का निर्माण कैसे हुआ।, पश्चिमी घाट की पर्वत श्रेणियाँ/पहाड़ियों के नाम लिखिए, ज्वालामुखी की परिप्रशांत मेखला का वर्णन कीजिए।, राँकी पर्वत की भौगोलिक विशेषताओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।, भारत के उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वनों की भौगोलिक विशेषताओं का वर्णन, दक्षिणी पूर्वी एशिया की भू-राजनीतिक समस्याओं की विवेचना।(मु0 प0 2021)

खण्ड-स-राजस्थान का भूगोल

i. पाठ्यक्रम

- ❖ प्रमुख भौतिक भू-आकृतियाँ : पर्वत, पठार, मैदान, नदियाँ एवं झीलें, प्रमुख भू-आकृतिक प्रदेश, प्राकृतिक वनस्पति एवं जलवायु, पशुपालन, जंगली जीव-जन्तु एवं उनका संरक्षण, कृषि-प्रमुख फसलें, **खनिज संसाधन**—(क) धात्विक खनिज : प्रकार, वितरण एवं उनका औद्योगिक उपयोग (ख) अधात्विक खनिज :

प्रकार, वितरण एवं उनका औद्योगिक उपयोग, ऊर्जा संसाधन : परम्परागत एवं गैर परम्परागत स्रोत, जनसंख्या एवं जनजातियाँ, वन्यजीव एवं जैव विविधता – चुनौतियाँ एवं संरक्षण, यूनेस्को की भू-पार्क एवं भू-धरोहर स्थल संकल्पना। राजस्थान में संभावनाएँ।

❖ प्रमुख पर्यावरण संबंधी मुद्दे।

- ii. **अध्ययन सामग्री एवं तैयारी**—इस इकाई में राजस्थान के भूगोल की तैयारी पैनोरमा या लक्ष्य राजस्थान में से किसी एक पुस्तक से करने के साथ ही सिखवाल या अन्य किसी प्रकार के मानचित्र से प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा दोनों की तैयारी करनी चाहिए।
- iii. **पिछले वर्षों के प्रश्न**—प्रारम्भिक एवं मुख्य दोनों परीक्षाओं में इससे संबंधित काफी प्रश्न पूछे जाते हैं। पूर्व की प्रारम्भिक परीक्षा के अलावा मुख्य परीक्षा के प्रश्न पत्र में आए प्रश्नों का अवलोकन करने से तैयारी के लिए अभ्यर्थियों को दिशा मार्गदर्शन मिलता है जो इस प्रकार है—
 - राजस्थान के डांग क्षेत्र की विशेषताएँ, पश्चिमी राजस्थान भारत का अत्यधिक सूखा प्रभावित क्षेत्र क्यों ? राजस्थान के भोखावटी क्षेत्र की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पहचान, राजस्थान में सौर ऊर्जा की विपुल संभावनायें हैं समझाइए (मु0 प0 2013)
 - राजस्थान के मुख्य अधात्विक खनिजों, राजस्थान में इमारती पत्थरों का प्रभाव एवं महत्व, राजस्थान में लिग्नाइट कोयले के वितरण एवं औद्योगिक उपयोग—(मु0 प0 2016)
 - राजस्थान में सीसा एवं जस्ता उत्पादन क्षेत्र एवं विवरण, राजस्थान के गरासिया जनजाति की आर्थिक, सामाजिक विशेषताएँ—(मु0 प0 2016)
 - राजस्थान में सौर ऊर्जा हेतु कौनसी उपयुक्त दशाएँ हैं? राजस्थान में संरक्षित क्षेत्र, पशुधन नस्ले एवं क्षेत्र, राजस्थान में मक्का उत्पादन के लिए उपयुक्त दशाएँ एवं उत्पादन क्षेत्र, राजस्थान में सीमेन्ट उद्योग की अवस्थिति के कारण एवं वृद्धि की व्याख्या, भोखावटी प्रदेश की मुख्य भौतिक विशेषताएँ, राजस्थान में नदी प्रणालियों का वर्णन—(मु.प. 2018)
 - राजस्थान के जस्ता उत्पादक क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए, राजस्थान के हाड़ौती पठार की भौतिक विशेषताओं की विवेचना।, राजस्थान में प्रमुख धात्विक खनिजों के वितरण की संक्षेप में विवेचना, राजस्थान में गैर—परम्परागत ऊर्जा के विकासका विवरण।, भू—धरोहर स्थल की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए तथा राजस्थान में इसकी संभाव्यता पर प्रकाश डालिए। —(मु.प. 2021)

इस प्रकार राजस्थान के भूगोल में भी तथ्याधारित प्रश्न पूछे जाते हैं तथा इस इकाई का अंक भार भी ज्यादा है एवं अंकदायी भाग है। इसलिए हमारी राय में इस भाग में निर्धारित सभी टॉपिक का गहनता से अध्ययन करना चाहिए।

“यदि आप समय पर परिश्रम नहीं करते हैं तो आपके लक्ष्य एवं सपने कभी पूरे नहीं होंगे।”

*—ब्रेन्डा जोहन्सन
पेडिग्ट*

3.5.3 तृतीय प्रश्नपत्र—सामान्य ज्ञान एवं सामान्य अध्ययन

सामान्य अध्ययन के तृतीय प्रश्नपत्र में भारतीय संविधान, भारत की राजव्यवस्था, वैश्विक राजनीति, राजस्थान की राज्य राजनीति, लोक प्रशासन एवं प्रबंध, राजस्थान का प्रशासनिक ढाँचा, जिला प्रशासन, खेल एवं योग, व्यवहार एवं विधि शामिल हैं। इसका पाठ्यक्रम बहुआयामी है तथा अध्ययन स्त्रोत की दृष्टि से भी सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को शामिल करने वाली पुस्तकें भी कम उपलब्ध हैं इसलिए कई स्त्रोतों से इस प्रश्नपत्र की तैयारी करनी पड़ती है लेकिन पाठ्यक्रम में अंकित बिन्दुओं के मुताबिक विशिष्ट तैयारी की जाएं तो इसमें भी अच्छे अंक लाए जा सकते हैं। इसके लिए निम्न कार्य योजना के मुताबिक तैयारी किया जाना उचित रहेगा यथा—

यूनिट-1-भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, विश्वराजनीति एवं सामयिक मामले

i. पाठ्यक्रम

- ❖ भारतीय संविधान— निर्माण, विशेषताएँ, संशोधन, मूल ढाँचा
- ❖ वैचारिक सत्त्व— उद्देशिका, मूल अधिकार, राज्य नीति के निदेशक तत्व एवं मूल्य कर्तव्य
- ❖ संस्थात्मक ढाँचा—1 संसदीय प्रणाली, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्, संसद
- ❖ संस्थात्मक ढाँचा 2—संघवाद, केन्द्र—राज्य संबंध, उच्चतम न्यायालय, न्यायिक पुनरावलोकन, न्यायिक सक्रियता।
- ❖ संस्थात्मक ढाँचा 3— भारत निर्वाचन आयोग, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, नीति आयोग, केन्द्रीय सतर्कता आयोग, केन्द्रीय सूचना आयोग, केन्द्रीय मानव अधिकार आयोग।
- ❖ राजनीतिक गत्यात्मकताएँ— भारतीय राजनीति में जाति, धर्म, वर्ग नृजातीयता, भाषा एवं लिंग की भूमिका, राजनीतिक दल एवं मतदान व्यवहार नागरिक समाज एवं राजनीतिक आंदोलन, राष्ट्रीय अखण्डता एवं सुरक्षा से जुड़े मुद्दे, सामाजिक—राजनीतिक संघर्ष के संभावित क्षेत्र
- ❖ राजस्थान की राज्य—राजनीति— दलीय प्रणाली, राजनीतिक जनांकिकी, राजस्थान में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के विभिन्न चरण, पंचायती एवं नगरीय स्वशासन संस्थाएँ।
- ❖ शीत युद्धोत्तर दौर में उदीयमान विश्व—व्यवस्था, संयुक्त राज्य अमेरिका का वर्चस्व एवं इसका प्रतिरोध, संयुक्त राष्ट्र एवं क्षेत्रीय संगठन, अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद एवं पर्यावरण मुद्दे।
- ❖ भारत की विदेशी नीति—उद्विकास, निर्धारक तत्व, संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन, रूस एवं यूरोपीय संघ के साथ भारत के संबंध, संयुक्त राष्ट्र संघ, गुट निरपेक्ष आंदोलन, ब्रिक्स, जी-20, जी-77 एवं सार्क में भारत की भूमिका।
- ❖ दक्षिण एशिया, दक्षिण—पूर्व एशिया एवं पश्चिम एशिया में भू—राजनीतिक एवं रणनीतिक विकास तथा उनका भारत पर प्रभाव
- ❖ समसामयिक मामले—राजस्थान, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की समसामयिक घटनाएँ, व्यक्ति एवं स्थान, खेलकूद से जुड़ी हाल की गतिविधियाँ।

ii. अध्ययन सामग्री एवं तैयारी—भाग 'अ' में भारतीय संविधान एवं भारतीय राजनैतिक व्यवस्था के टॉपिक है जो प्रारम्भिक परीक्षा में भी शामिल है। इसकी तैयारी के लिए प्रतियोगी परीक्षा की दृष्टि से भारतीय राजव्यवस्था—एम. लक्ष्मीकांत पढ़ना उचित रहेगा। इस पुस्तक से संविधान एवं राजव्यवस्था का विषय अच्छी तरह पढ़ना है। संविधान के लिए बेयर एक्ट भी पढ़ा जाना उचित रहेगा क्योंकि प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा दोनों में संविधान के अनुच्छेद एवं उनमें स्थित प्रावधान के संबंध में सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। इसके साथ ही प्रस्तावना, मूल अधिकार, नीति निर्देशक तत्व, संसदीय शासन व्यवस्था, संघात्मक व्यवस्था एवं संवैधानिक व वैधानिक संस्थाएँ भी इसी पुस्तक से पढ़ी जा सकती है। राजनीति महत्वाकांक्षाओं में समकालीन राजनीतिक मुद्दों को एन.सी.ई. आर.टी की राजनीति विज्ञान (स्वतंत्र भारत की राजनीति) की पुस्तक से पढ़ने के साथ—साथ समसामयिकी, राष्ट्रीय राजनीतिक परिवर्तनों एवं घटनाओं से भी अपनी पाठ्य सामग्री को अपडेट करना है।

iii. पिछले वर्षों के प्रश्न –

- भारतीय संविधान की प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्षता की परिभाषा, धन विधेयक व सुशासन पर टिप्पणी, संविधान सभा में मुर्शी आयोग के सूत्र, भारतीय संविधान में भारत सरकार अधिनियम 1935 से क्या ग्रहण किया विवेचना कीजिए, भारत कई एकात्मक विशेषताओं सहित संघात्मक राज्य है टिप्पणी करें। (मु0 प0 2013),
- प्रस्तावना में चार सामाजिक मूल्य, धर्मनिरपेक्षता, भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्वों में उल्लेखित पर्यावरण संरक्षण के प्रावधान, भारतीय संविधान की 9वीं अनुसूची क्या है, बोम्मई वाद के निर्णय में उच्चतम न्यायालय द्वारा अनुच्छेद 356 के प्रयोग पर संस्थापित रक्षोपयोगी उपायों की विवेचना, सम्पत्ति का अधिकार की संवैधानिक स्थिति, नीति आयोग के कार्य, राष्ट्रीय राजनीतिक दल की मान्यता के मापदण्ड, शासन में सिविल सोसायटी की बढ़ती भूमिका की विवेचना (मु0 प0 2016)
- उद्देश्य प्रस्ताव में स्वतंत्रता का क्षेत्र, संविधान के अनुच्छेद 355 की भूमिका, केन्द्रीय सतर्कता आयुक्त का अन्वेषण अधिकार, अनुच्छेद 21 में प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता के अधिकार के निहितार्थ, राष्ट्रपति के निर्वाचन प्रक्रिया की कमियाँ, संविधान की उद्देशिका में न्याय के निहितार्थ, भारतीय संविधान में संसद एवं उच्चतम न्यायालय के मध्य सर्वोच्चता के संघर्ष के संरचनात्मक एवं परिचालनात्मक पहलु (मु0 प0 2018)
- भारत के संविधान की उद्देशिका में उल्लिखित बंधुता को स्पष्ट कीजिए।, भारत के संविधान के अनुच्छेद 103 में निर्वाचन आयोग की भूमिका क्या है।, आजाद हिन्दुस्तान का पहला मंत्रिमण्डल राजनीतिक चरित्र का नहीं बल्कि राष्ट्रीय चरित्र का था। केवल तथ्यों के साथ कथन का समर्थन या विरोध कीजिये।, मुख्य न्यायमूर्ति रामन्ना ने कहा है कि न्यायिक समीक्षा को न्यायिक अतिरेक के रूप में प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति ठीक नहीं है। उनके इस कथन का क्या अर्थ है।, भारत के राष्ट्रपति को पद से हटाने के सांविधानिक प्रावधान को स्पष्ट करें। भारत में न्यायिक पुनर्विलोकन की विशेषताओं एवं उद्विकास का वर्णन कीजिए।, योजना आयोग और नीति आयोग की कार्यप्रणाली में अंतर और भारतीय संघवाद पर उसके प्रभाव का वर्णन करें। –(मु.प. 2021)

iv. **अन्तर्राष्ट्रीय संबंध**—समकालीन विश्व की राजनीति एन.सी.ई.आर.टी. की पुस्तक से पढ़कर पाठ्यक्रम में दिए गए टॉपिक के नोट्स तैयार करना उचित रहेगा। इसमें चर्चित मुद्दों, वैश्विक संगठनों (यू.एन.ओ. जी –77), क्षेत्रीय संगठनों (सार्क) के साथ-साथ भारत के अमेरिका, यूरोपीय संघ, चीन, सार्क देशों के साथ वर्तमान संबंधों, विदेशी नीति आदि के बारे में पिछले एक से दो वर्षों के बीच हुए घटनाक्रम पर विशेष ध्यान केन्द्रित करते हुए इन नोट्स को अपडेट करना है। इसमें ऐतिहासिक संबंधों के साथ समसामयिक विषयों पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

v. पिछले वर्षों के प्रश्न

- शीत युद्धोत्तर काल में नवीन विश्व व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ, शीत युद्ध के बाद भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण परिवर्तनों का विश्लेषण, सार्क के समक्ष चुनौतियाँ, जी-20 की प्रासंगिकता, दक्षिण चीन सागर में चीन की गतिविधियों पर भारत की प्रतिक्रिया (मु0 प0 2016)
- जलवायु परिवर्तन पर भारत का रुख, दक्षिण-पूर्व एशिया भारत-चीन संबंधों के संबंध में संयुक्त राज्य अमेरिका का दृष्टिकोण, भारत-यूरोपीय संघ के संबंधों पर ब्रेकजेट के प्रभाव की विवेचना—(मु0 प0 2018)
- अब्राहम समझौते के मुख्य बिन्दु क्या है।, थाड क्या है।, जी-20 रोम शिखर सम्मेलन 2021 के चार प्रमुख मुद्दे, एक सूर्य, एक विश्व, एक ग्रिड की अवधारणा को स्पष्ट करें।, हिन्द प्रशांत क्षेत्र में “क्वाड” की रणनीतिक भूमिका का विवेचन कीजिए।—(मु.प. 2021)
- इसी इकाई में समसामयिकी के पाठ्यक्रम में “**राजस्थान, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की समसामयिक घटनाएँ, व्यक्ति एवं स्थान, खेलकूद से जुड़ी हाल की गतिविधियाँ**” शामिल है। यह टॉपिक प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा के साथ-साथ साक्षात्कार के लिए भी उपयोगी है इसलिए नियमित समाचार पत्र अध्ययन, मासिक पत्रिका या अन्य माध्यम से समसामयिकी मुद्दों पर तथ्यों एवं विचारों का संकलन करते हुए तैयारी करनी है। समसामयिकी अन्य विषयों (अर्थशास्त्र, राजव्यवस्था, पर्यावरण एवं तकनीकी) के साथ हिन्दी एवं अंग्रेजी निबंध की तैयारी में भी उपयोगी रहेगी। समसामयिकी की घटनाएँ उत्तर में उदाहरण के रूप में लिखने तथा अन्तर्विषयक दृष्टि के लिए भी उपयोगी रहती हैं।
- इकाई 1 में राजस्थान से संबंधित पाठ्यक्रम में “**राजस्थान की राज्य-राज्यनीति— दलीय प्रणाली, राजनीतिक जनांकिकी, राजस्थान में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के विभिन्न चरण, पंचायती एवं नगरीय स्वशासन संस्थाएँ**” शामिल है जिसमें सेनिरंतर प्रश्न पूछे जाते हैं। इन विषय को डॉ. जनक सिंह की पुस्तक से तथा पंचायतीराज व स्थानीय स्वायत्त शासन व्यवस्था एवं अधिनियम को एम. लक्ष्मीकांत से या आर.बी.एस.ई. राजनीति विज्ञान कक्षा-12 से पढ़कर स्वयं के नोट्स बनाकर तैयारी करनी चाहिए। राजस्थान की राजव्यवस्था के अध्ययन से

राजस्थान के राजनीतिक परिदृश्य की समझ विकसित करनी होगी क्योंकि इसमें पिछले 2-3 दशक की सामयिक राजनीतिक परिदृश्य के मद्देनजर प्रश्न पूछे जाते हैं

- vii. पिछले वर्षों के प्रश्न** —राजस्थान में पंचायतीराज संस्थाओं में महिला आरक्षण का प्रभाव, राजस्थान में स्वतंत्र पार्टी के सामाजिक-आर्थिक आधार, राजस्थान में जातीय राजनीतिकरण, 1998 से राजस्थान में स्थिर हो रही द्विदलीय प्रणाली की परिघटना की विवेचना—(मु0 प0 2016)
- राजस्थान की राजनीतिक जनांकिकी, राजस्थान में किसी प्रभावशाली राज्य राजनीतिक दल के अभाव का विश्लेषण—(मु0 प0 2018) स्वतंत्रता पश्चात,
 - राजस्थान में प्रथम विधानसभा चुनाव की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।, राजस्थान में ग्राम सभा की प्रभावी कार्यप्रणाली के लिए सुझाव दीजिए। (मु.प. 2021)

यूनिट—II लोक प्रशासन एवं प्रबंधन की अवधारणाएँ, मुद्दे एवं गत्यात्मकता

i. पाठ्यक्रम

- ❖ प्रशासन एवं प्रबंध—अर्थ, प्रकृति एवं महत्व, विकसित एवं विकासशील समाजों में लोक प्रशासन की भूमिका, एक विषय के रूप में लोक प्रशासन का विकास, नवीन लोक प्रशासन, लोक प्रशासन के सिद्धान्त।
 - ❖ अवधारणाएँ—शक्ति, सत्ता, वैधता, उत्तरदायित्व एवं प्रत्यायोजन।
 - ❖ संगठन के सिद्धान्त—पदसोपान, नियंत्रण का क्षेत्र एवं आदेश की एकता।
 - ❖ प्रबंधन के कार्य—निगमित शासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व।
 - ❖ लोक प्रबंधन के नवीन आयाम—परिवर्तन का प्रबंधन।
 - ❖ लोक सेवा के आधारभूत मूल्य एवं अभिवृत्ति—लोक सेवा सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, गैरपक्षधरता एवं समर्पण, सामान्यज्ञ एवं विशेषज्ञ संबंध।
 - ❖ प्रशासन पर विधायी एवं न्यायिक नियंत्रण— विधायी एवं न्यायिक नियंत्रण की विभिन्न पद्धतियाँ एवं तकनीक।
 - ❖ राजस्थान में प्रशासनिक ढाँचा एवं प्रशासनिक संस्कृति—राज्यपाल, मुख्यमंत्री, मंत्रिपरिषद, राज्य सचिवालय एवं मुख्य सचिव।
 - ❖ जिला प्रशासन—संगठन, जिलाधीश एवं पुलिस अधीक्षक की भूमिका, उपखण्ड एवं तहसील प्रशासन
 - ❖ प्रशासनिक विकास— अर्थ, क्षेत्र एवं विशेषताएँ।
 - ❖ राज्य मानवाधिकार आयोग, राज्य निर्वाचन आयोग, राज्य वित्त आयोग, लोकायुक्त, राजस्थान लोक सेवा आयोग एवं राजस्थान लोक सेवा अधिनियम 2011
- ii. **अध्ययन सामग्री एवं तैयारी**—इकाई—2 प्रशासन एवं प्रबंध, नवीन लोक प्रशासन, अवधारणाएँ, संगठन के सिद्धान्त, प्रबंधन के कार्य, लोक प्रबंधन के नवीन आयाम, प्रशासनिक विकास, लोक सेवा के आधारभूत मूल्य एवं अभिवृत्ति, प्रशासन पर विधायी एवं न्यायिक नियंत्रण आदि की विषयवस्तु को सरल भाषा में समझने हेतु मा.शि.बो. की लोक प्रशासन कक्षा 11वीं एवं 12वीं की पुस्तक में जितने टॉपिक हैं उतने पढ़ने हैं। इसके बाद अपनी तैयारी को थोड़ा उन्नत करते हुए एम. लक्ष्मीकांत की प्रशासन एवं प्रबंध से पढ़ना उचित रहेगा। इन दोनों में उपर्युक्त सभी टॉपिक मिल जाएँगे। जिनसे इस इकाई की पूरी तैयारी की जा सकेगी।

iii. पिछले वर्षों के प्रश्न —

- लोक प्रशासन, नीति निरूपण एवं संवेदनशीलता के क्षेत्र में प्रमुख नवाचारों एवं सुधारों की व्याख्या कीजिए (मु0 प0 2013),
- सामान्यज्ञ प्रशासक, विकास प्रशासन एवं प्रशासनिक विकास में अंतर, नव लोक प्रशासन की चार आधारभूत विशेषताएँ राजनीति प्रशासन द्वि विभाजन, बन्दी प्रत्यक्षीकरण प्रलेख प्रयोजन, संसद द्वारा लोक प्रशासन नियंत्रण की पद्धतियाँ, नियामकीय प्रशासन एवं विकास प्रशासन में अंतर — (मु0 प0 2016)
- प्रशासनिक संस्कृति, सिविल सेवा मूल्य, हेनरी फेयोल के प्रबंध के 5 कार्य, नियंत्रण के क्षेत्र को प्रभावित करने वाले चार कारक, शून्यकाल, प्रतिषेध एवं परमादेश में अंतर, प्रशासन की नवशास्त्रीय विचारधारा की मुख्य विशेषता, लोक प्रशासन के सामाजिक उत्तरदायित्व।(मु0 प0 2018)
- आदेश की एकता एवं निर्देश की एकता में क्या अन्तर है।, प्रशासन की प्रकृति के संबंध में प्रबंधकीय दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।, लेखानुदान क्या है।, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को पारिभाषित कीजिए।

- औपचारिक प्रत्यायोजन क्या है।, प्रशासन पर न्यायिक नियंत्रण के विभिन्न रूपों का उल्लेख, परम्परागत एवं विकास प्रशासन के मध्य प्रमुख अन्तर की परिगणना कीजिए।, सचिवालय एवं निदेशालय में भेद कीजिए।, उच्च लोक सेवाओं में पार्ष्वक प्रवेश (लेटरल एण्ट्री) के प्रभाव का विश्लेषण कीजिए।, सुशासन तथा लोक सेवाओं में नैतिकता के लक्ष्य गाँधीजी द्वारा बतायी गयी सात सामाजिक बुराइयों की अवधारणा की जानकारी प्राप्त किए जा सकते हैं।" विश्लेषण कीजिए।, किसी जिले में कानून एवं व्यवस्था के संधारण हेतु जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक की भूमिकाओं का विश्लेषण कीजिए।(मु0 प0 2021)

इस इकाई के प्रश्नोत्तर के अभ्यास हेतु प्रशासन एवं प्रबंधन हेतु राजकुमार कस्वा की पुस्तक भी उपयोगी रहेगी। साथ ही लोक प्रशासन एवं प्रबंध की अवधारणाओं, मुद्दों आदि को भी एम. लक्ष्मीकांत की लोक प्रशासन एवं प्रबंध से तैयार करना चाहिए। इसमें लोक प्रशासन के सिद्धांत व अवधारणाओं के सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं।

iv. राजस्थान में लोक प्रशासन—इसी इकाई में राजस्थान में प्रशासनिक ढाँचा एवं संस्कृति, जिला प्रशासन, संवैधानिक आयोग आदि की तैयारी के लिए रा.मा.शि.बोर्ड की पुस्तकों के अलावा राजकुमार कस्वा की प्रशासन एवं प्रबंधन पुस्तक भी बहुत उपयोगी रहेगी। इस भाग में साधारण प्रकृति के प्रश्न पूछे जाते हैं जिनके उत्तर इन पुस्तकों का अध्ययन करके आसानी से दिए जा सकते हैं।

v. पिछले वर्षों के प्रश्न —

- राजस्थान राज्य में निर्माण से लेकर अब तक लोक प्रशासन, नीति निरूपण एवं संवेदनशीलता के क्षेत्र में प्रमुखता नवाचारों एवं सुधारों की व्याख्या—(मु0 प0 2013)
- राज्य प्रशासन में मुख्यमंत्री की स्थिति एवं भूमिका का आलोचनात्मक मूल्यांकन, राज्य लोक सेवा आयोग सदस्य की पदच्युति का आधार —(मु0 प0 2016)
- जिला प्रशासन में जिला कलेक्टर की आलोचनात्मक भूमिका, राज्य प्रशासन में मुख्य सचिव की भूमिका, राजस्थान लोक सेवा गारंटी अधि. 2011 की मुख्य विशेषताएँ, राज्य सचिवालय के कोई दो कार्य, लोकायुक्त के 5 कार्य—(मु0 प0 2018)
- राजस्थान में लोकायुक्त के क्षेत्राधिकार की विवेचना।, राजस्थान सुनवाई का अधिकार अधिनियम 2012 की प्रमुख विशेषताओं का मूल्यांकन (मु0 प0 2021)

यूनिट—III- खेल वं योग, व्यवहार एवं विधि

खण्ड—अ - खेल वं योग

i. पाठ्यक्रम

- ❖ भारत एवं राजस्थान राज्य में खेलों की नीतियाँ, भारतीय खेल प्राधिकरण एवं राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद।
- ❖ राष्ट्रीय खेल पुरस्कार (अर्जुन पुरस्कार, द्रोणाचार्य पुरस्कार, राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार, महाराणा प्रताप पुरस्कार इत्यादि एवं राज्य के खेल पुरस्कार, सकारात्मक जीवन पद्धति—योगा, भारत के श्रेष्ठ खिलाड़ी, खेलों में प्राथमिक उपचार एवं पुर्नवास, भारतीय खिलाड़ियों की ओलम्पिक, एशियन खेल, कॉमनवेल्थ एवं पैरा—ओलम्पिक खेल में भागीदारी।

ii. अध्ययन सामग्री एवं तैयारी—इकाई—3 के भाग 'अ' में खेल एवं योग विषय 2018 में नया जोड़ा गया है। इसमें योग के अलावा राज्य स्तरीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की करंट खेल गतिविधियों, खिलाड़ियों, पुरस्कारों, (राज्य एवं राष्ट्रीय) खेल में चुनौतियों तथा राज्य क्रीडा परिषद का समावेश किया गया है। योग तथा खेल संबंधी ज्यादातर सामग्री रा.मा.शि. बोर्ड की शारीरिक शिक्षा 9वीं एवं 10वीं की पुस्तक उपलब्ध है। इसके अलावा शेष सामग्री खेल करंट अफेयर्स से संग्रहीत करनी हैं। तैयारी के दौरान यदि परीक्षा वर्ष से एक वर्ष पूर्व की राज्य, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय खेल गतिविधियों एवं उनमें भाग लेने वाले खिलाड़ी, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरीय पुरस्कारों के बारे में जानकारी एकत्र कर स्वयं के नोट्स तैयार कर लेते हैं तो इसकी आसानी से तैयारी हो जाएगी। पूर्व के प्रश्नपत्र के प्रश्नों से तैयारी को दिशा मिल सकती है यथा—

iii. पिछले वर्षों के प्रश्न —

योग कर्मषु कौशलम समझाइए, खेलों में वशिष्ठ अवार्ड, राजस्थान क्रीडा परिषद के सदस्यों का पदानुक्रम, अपूर्वी चन्देला एवं मानव टक्कर की खेल उपलब्धियाँ, ग्रीन स्टिक फ्रेक्चर, पी.एस.पी.बी टेनिस अकादमी—2018

- राजस्थान में खेलों में उत्कृष्टता के लिए वार्षिक रूप में दिए जाने वाले पुरस्कार का नाम लिखते हुए इसकी चयन समिति का पदानुक्रम लिखिए।, योगराज उपनिषद के अनुसार योग के प्रकार लिखिए।, राजस्थान के खेलों में श्री भगनसिंह राजवी के योगदान को लिखिए।, राजस्थान राज्य खेल परिषद द्वारा संचालित किन्हीं चार खेल अकादमियों के नाम लिखिये।, मेजर ध्यानचन्द खेल रतन पुरस्कार 2021 से सम्मानित पैरा-खिलाड़ियों के नाम उनके खेल सहित लिखिए।—(मु0 प0 2021)
- राष्ट्रीय खेल नीति में खिलाड़ियों के वैज्ञानिक पूर्तिकर का क्या महत्व है।, खेलों में पुनर्स्थापन क्या है। टी. ई.एन.एस. चिकित्सा को परिभाषित कीजिए।

खण्ड—ब—व्यवहार

i. पाठ्यक्रम

- ❖ बुद्धि: संज्ञानात्मक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि, सांस्कृतिक बुद्धि और हावर्ड गार्डनर का विविध बुद्धि सिद्धान्त।
- ❖ व्यक्तित्व : मनोविश्लेषण सिद्धान्त, शीलगुण व प्रकार सिद्धान्त, व्यक्तित्व निर्धारण के कारण और व्यक्तित्व मापन विधियाँ।
- ❖ अधिगम और अभिप्रेरणा : अधिगम की शैलियाँ, स्मृति के मॉडल और विस्मृति के कारण, अभिप्रेरणा के वर्गीकरण व प्रकार, कार्य अभिप्रेरणा के सिद्धान्त और अभिप्रेरणा का मापन।
- ❖ प्रतिबल एवं प्रबंधन—प्रतिबल की प्रकृति, प्रकार, स्रोत, लक्षण एवं प्रभाव, प्रतिबल प्रबंधन, मानसिक स्वास्थ्य का प्रोत्साहन।

i. अध्ययन सामग्री एवं तैयारी—इस भाग के लिए एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 11वीं एवं 12वीं की मनोविज्ञान की पुस्तकें पढ़ना बहुत ही उपयोगी रहेगा। इस परीक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल टॉपिक ही पढ़कर उनके अपने नोट्स तैयार करके उनका रिवीजन करना है। इसके बाद पुस्तक के पाठों के पीछे दिए गए प्रश्नों को हल करने के अलावा स्वनिर्मित प्रश्नों से उत्तर लेखन का अभ्यास करना चाहिए। व्यवहार में सीधे तथ्य, सिद्धान्त आदि से संबंधित प्रश्न पूछे जा रहें हैं।

iii. पिछले वर्षों के प्रश्न—इसमें पूर्व की परीक्षाओं के प्रश्नों से हमें मार्गदर्शन मिल सकता है—

- अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तित्व, आत्मसिद्धि, सामान्य अनुकूलन संलक्षण, व्यक्तित्व मूल्यांकन प्रक्षेपण विधि विशेषताएँ—(मु0 प0 2016)
- सांवेगिक बुद्धि, व्यक्तित्व का भावमूलक दृष्टिकोण, स्मृति का बार्टलेट दृष्टिकोण, सामान्य अनुकूलन संलक्षण, गार्डनर का बहुबुद्धि सिद्धान्त (मु0 प0 2018)
- संवेगात्मक बुद्धि से क्या आशय है।, व्यक्तित्व के बृहत पाँच कारक कौन से हैं।, स्मृति की तीन अवस्थाओं के

बारें में लिखिए।, तनाव के स्रोत बताइए, बुद्धि को परिभाषित करिये। व्यक्तित्व के प्रमुख प्रक्षेपीय मापों का वर्णन

करिये, तनाव प्रबंधन की युक्तियों को समझाइए (मु0 प0 2021)

खण्ड—स—विधि

i. पाठ्यक्रम—

- ❖ विधि की अवधारणा— स्वामित्व एवं कब्जा, व्यक्तित्व, दायित्व, अधिकार एवं कर्तव्य।
- ❖ वर्तमान विधिक मुद्दे—सूचना का अधिकार, सूचना प्रौद्योगिक विधि, साइबर अपराध सहित (अवधारण, उद्देश्य, प्रत्याशाएँ), बौद्धिक सम्पदा अधिकार (अवधारणा, प्रकार एवं उद्देश्य)
- ❖ स्त्रियों एवं बालकों के विरुद्ध अपराध— घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न, लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम 2012, बाल श्रमिकों से संबंधित विधि।
- ❖ माता—पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण—पोषण तथा कल्याण अधिनियम, 2007।
- ❖ राजस्थान में महत्वपूर्ण भूमि विधियाँ (क) राजस्थान भू—राजस्व अधिनियम 1956 (ख) राजस्थानी काश्तकारी अधिनियम 1955

ii. अध्ययन सामग्री एवं तैयारी—इस भाग की तैयारी हेतु पाठ्यक्रम में शामिल विभिन्न मूल अधिनियम का अध्ययन कर इन अधिनियम में आए विधिक पारिभाषिक शब्द, उन कानूनों के उद्देश्य, कानूनों का दायरा एवं अन्य कानूनी प्रावधान के नोट्स तैयार करने हैं इसके लिए विभिन्न मूल कानूनों की अलग—अलग पुस्तक

खरीदकर या इंटरनेट से डाउनलोड करके उनका प्रिन्ट करवा कर इनका अध्ययन करने के बाद सारगर्भित नोट्स बनाएँ।

iii. पिछले वर्षों के प्रश्न— पिछले वर्षों से विभिन्न कानूनों से पारिभाषिक शब्दावली सहित कानूनी प्रावधानों के प्रश्न पूछे जा रहे हैं।

- बौद्धिक सम्पदा का अधिकार के दो प्रकार, पोक्सों अधिनियम में 'बालक' कौन है, महिलाओं का घरेलू हिंसा संरक्षण अधिनियम में "व्यथित व्यक्ति" से तात्पर्य, सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 में 'कम्प्यूटर' शब्द की परिभाषा, राजस्थान काश्तकारी अधिनियम, 1955 में 'अतिचारी' किसे माना है, राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 के अन्तर्गत 5 प्रकार की भूमि जिस पर खातेदारी अधिकार उत्पन्न नहीं होते हैं (मु0 प0 2016)
- सूचना का अधिकार अधिनियम में सूचना माँगने का हक किसे है, महिलाओं का घरेलू हिंसा से संरक्षण अधिनियम के तहत "बालक" की परिभाषा, राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 के तहत अभिधारियों के प्राथमिक अधिकार, राजस्थान भू राजस्व अधिनियम, 1955 के तहत "नजूल भूमि" की परिभाषा—(2016) राजस्थान काश्तकारी अधिनियम में 'कृषक' की परिभाषा, महिलाओं का घरेलू हिंसा संरक्षण अधिनियम 2005 में अनुतोष हेतु मजिस्ट्रेट के समक्ष आवेदन करने का अधिकार किन व्यक्तियों को है सूचना का अधिकार अधिनियम में "तृतीय पक्षकार", पोक्सो अधिनियम का प्रमुख उद्देश्य, सूचना का अधिकार अधिनियम में सूचना का 'अधिकार क्षेत्र', राजस्थान भूमि राजस्व अधिनियम में वार्षिक रजिस्टर की अभिव्यक्ति अधिकार अभिलेख से अधिक है—(मु0 प0 2018)
- पूर्ण एवं अपूर्ण अधिकार के मध्य क्या अन्तर है।, सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 में प्रयुक्त अभिव्यक्ति "सूचना का अधिकार" को परिभाषित कीजिए।, महिलाओं का कार्यस्थल पर लैंगिक उत्पीड़न (निवारण, प्रतिषेध एवं प्रतिरोध) अधिनियम 2013 के अन्तर्गत उल्लिखित "लैंगिक उत्पीड़न" का अर्थ लिखिए।, माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण एवं कल्याण अधिनियम 2007 के अनुसार नातेदान पद को परिभाषित कीजिए।, नजूल भूमि पद की परिभाषा दीजिए।—(मु0 प0 2021)
- राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 में अधिकार अभिलेख की अन्तर्वस्तु बताइए।, लैंगिक अपराधों से बालकों का संरक्षण अधिनियम 2012, में उल्लेखित "लैंगिक हमला" पद का वर्णन कीजिए।

*“एक निराशावादी को हर अवसर में कठिनाई दिखाई देती है,
एक आशावादी को हर कठिनाई में अवसर दिखाई देता है”
— विस्टन चर्चिल*

3.5.4 चतुर्थ प्रश्नपत्र—सामान्य हिन्दी एवं सामान्य अंग्रेजी

सामान्य हिन्दी एवं सामान्य अंग्रेजी के प्रश्नपत्र में पहले तीन प्रश्नपत्र के मुकाबले औसतन अधिक अंक लाए जा सकते हैं क्योंकि इनका पाठ्यक्रम एवं प्रश्नपत्र प्रारूप विशिष्ट एवं निश्चित है। वर्ष 2018 की परीक्षा एवं पूर्व की परीक्षाओं में नजर डाले तो इस प्रश्नपत्र ने अभ्यर्थियों के चयन में निर्णायक भूमिका निभाई है। सामान्य ज्ञान के पहले तीन प्रश्नपत्रों में जहाँ 110 से अधिक अंक लाना ज्यादा मुश्किल होता है जबकि इस प्रश्नपत्र में थोड़ी मेहनत करके 120–130 अंक आसानी से लाये जा सकते हैं। वर्ष 2018 की परीक्षा में कई अभ्यर्थियों के 130–148 अंक भी इस प्रश्नपत्र में आये हैं तथा इसी एक प्रश्नपत्र के अंकों के आधार पर उन्हें परीक्षा में अच्छी रैंक प्राप्त हुई है। इस तरह इस प्रश्नपत्र में तैयारी की अच्छी योजना बनाकर निरंतर अध्ययन एवं अभ्यास से अच्छे अंक लाकर चयनित हो सकते हैं।

यूनिट—I सामान्य हिन्दी

भाग अ— (50 अंक)

i. पाठ्यक्रम—

- ❖ संधि एवं संधि—विच्छेद— दिये हुए शब्दों की संधि करना और संधि—विच्छेद करना, **उपसर्ग**—सामान्य ज्ञान, उपसर्गों से शब्दों की संरचना तथा शब्दों में से उपसर्ग एवं शब्द पृथक् करना, **प्रत्यय**— सामान्य ज्ञान, दिये हुए प्रत्ययों से शब्द बनाना और शब्दों में से प्रत्यय और शब्द पृथक् करना, पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, समश्रुत भिन्नार्थक शब्द—दिये हुए शब्द—युग्म का अर्थ—भेद, वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द, शब्द शुद्धि, वाक्य शुद्धि, मुहावरे—मुहावरों का वाक्य में सटीक प्रयोग, कहावत/लोकोक्ति— केवल भावार्थ, पारिभाषिक शब्दावली—प्रशासन से संबंधित अंग्रेजी शब्दों के समानार्थ हिन्दी पारिभाषिक शब्द,

ii. तैयारी—सामान्य हिन्दी में भाग 'अ' में हिन्दी व्याकरण के 50 अंक के प्रश्न पूछे जाते हैं इसमें स्मार्ट स्टडी करके अच्छे अंक लाए जा सकते हैं। इसके लिए व्याकरण के भाग जैसे संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय आदि को व्याकरण की किसी पुस्तक से समझने के बाद अधिक से अधिक प्रश्नोत्तर अभ्यास करें। प्रश्नपत्र के सबसे अधिक अंकदायी इस भाग की अच्छी तैयारी करके अच्छे अंक लाने का प्रयास करें।

भाग ब (अंक 50)

i. पाठ्यक्रम—

- ❖ संक्षिप्तीकरण—गद्यावतरण का उचित शीर्षक एवं लगभग एक—तिहाई शब्दों में संक्षिप्तीकरण (गद्यावतरण की शब्द सीमा लगभग 100 शब्द), पल्लवन— किसी सूक्ति, काव्य पंक्ति, प्रसिद्ध कथन आदि का भाव विस्तार (शब्द सीमा—लगभग 100 शब्द), पत्र लेखन—सामान्य कार्यालय पत्र, कार्यालय आदेश, अर्द्धशासकीय पत्र, अनुस्मारक
- ❖ प्रारूप लेखन—अधिसूचना, निविदा, परिपत्र, विज्ञप्ति, अनुवाद—दिये हुए अंग्रेजी अनुच्छेद का हिन्दी में अनुवाद (शब्द सीमा—लगभग 100 शब्द)

ii. तैयारी—भाग 'ब' में संक्षिप्तीकरण, पल्लवन एवं अनुवाद के लिए नियमित रूप से समाचार पत्र, पत्रिका या संबंधित साहित्य के अध्ययन के दौरान अभ्यास करते रहे।

- संक्षिप्तीकरण— इसमें दिए गए गद्यांश को पढ़कर उसमें लेखक के मंतव्य को समझकर उस गद्यांश के भावार्थ एवं सन्देश का अपने शब्दों में लगभग कुल अंश के एक तिहाई शब्दों में संक्षिप्त लेखन करना है।
 - भाव विस्तार— पल्लवन या भाव विस्तार दी गई सूक्ति का संदेश या विस्तृतभाव प्रश्न में बताई गई शब्द सीमा में सरल शब्दों में लिखना है। इन दोनों प्रश्नों (संक्षिप्तीकरण एवं पल्लवन) में हिन्दी के विलिखित शब्दों के समावेश से उत्तर को गंभीर बनाने के बजाय सहज, सरल व बोधगम्य भाषा का प्रयोग करें।
- पत्र लेखन एवं प्रारूप लेखन के तहत विभिन्न पत्र एवं प्रारूप का सामान्य हिन्दी की पुस्तकों से अध्ययन करने के बाद उनके आदर्श प्रारूप लेखन का अभ्यास करें। संभव हो तो राजस्थान सरकार एवं केन्द्र सरकार के कार्यालय से ऐसे पत्र एवं प्रारूप का अवलोकन करके भी इस भाग की अच्छी तैयारी की जा सकती है।

- अंग्रेजी अनुच्छेद का हिन्दी अनुवाद— अंग्रेजी समाचार पत्र (द हिन्दु या इंडियन एक्सप्रेस) के सम्पादकीय के अंश का कभी-कभी हिन्दी अनुवाद करने का अभ्यास करना चाहिए। गद्यांश में दी गई विषय वस्तु को पढ़कर उसके भावार्थ एवं लेखक के उद्देश्य को समाहित करते हुए सरल शब्दों में वर्तनीगत शुद्धियों का ध्यान रखकर अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद का अभ्यास करें।

भाग स- (अंक 20)

i. किसी सामयिक एवं अन्य विषय पर निबंध लेखन (शब्द सीमा—लगभग 250 शब्द)

भाग 'स' में दिए गए विषयों में से किसी एक विषय पर 250 शब्दों में निबंध लिखना होता है जो 20 अंक का होता है।

ii. पिछले वर्षों के प्रश्न

- वर्ष (मु0 प0 2016) में पूछे गए निबंध—1. जनसंचार माध्यम और हिन्दी दशा एवं दिशा
2. भारत की वर्तमान विदेश नीति
- विशेष परीक्षा में पूछे गए निबंध— 1. भारत खेल परिदृश्य—दशा एवं दिशा
2. कन्या भ्रूण हत्या— एक सामाजिक अभिशाप
- वर्ष (2018) की परीक्षा में पूछे गए निबंध— 1. राजस्थान में पर्यटन—विकास के नए आयाम (भूगोल एवं अर्थशास्त्र)
2. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एवं समाज (समसामयिकी मुद्दे)
3. भारतीय न्यायपालिका की सक्रियता— उपादेयता एवं संभावनाएँ (राजनीति विज्ञान)
- वर्ष (2021) की परीक्षा में पूछे गए निबंध—1. राजस्थान का सांस्कृतिक गौरव
2. सोशल मीडिया बनाम निजता
3. प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा का प्रयोग : दशा और दिशा

इन तीनों प्रश्नपत्रों के निबंध के अवलोकन से स्पष्ट है कि इस परीक्षा में राज्य एवं राष्ट्रीय स्तरीय समसामयिकी मुद्दों एवं सामाजिक समस्याओं पर सामान्यतः निबंध पूछा जाता है इसलिए अभ्यर्थियों को सामान्य अध्ययन के प्रश्नपत्र की तैयारी के साथ-साथ ऐसे समसामयिकी मुद्दों पर भी निबंध लेखन का अभ्यास करते रहना चाहिए जिससे अभिव्यक्ति एवं लेखन शैली में उन्नयन से निबंध में अच्छे अंक लाए जा सकें।

UNIT-2. General English (Total marks 80)

i. Syllabus

Part A- Grammar & Usage (20 marks)

- Correction of sentences : 10 sentences for correction with errors related to : Articles & Determiners
- Prepositions, Tenses & Sequence of Tenses, Modals, Voice – Active & Passive, Narration – Direct & Indirect, Synonyms & Antonyms, Phrasal Verbs & Idioms, One Word Substitute, Words often Confused or Misused

Part B- Comprehension, Translation & Precis Writing (30 Marks)

- Comprehension of an unseen passage (250 Words approximately) 05 Questions based on the passage. Question No. 5 should preferably be on vocabulary.
- Translation of five sentences from Hindi to English
- Precis Writing (a short passage approximately 150-200 words)

Part C- Composition & Letter Writing (30 Marks)

- Paragraph Writing – Any 01 Paragraph out of 03 given topics (approximately 200 words)
 - Elaboration of a given theme (Any 1 out of 3, approximately 150 words)
 - Letter Writing or Report Writing (approximately 150 words)

ii. तैयारी—चौथे प्रश्नपत्र के द्वितीय भाग में 80 अंक के सामान्य अंग्रेजी के प्रश्न पूछे जाते हैं—

- भाग 'अ' में हिन्दी की तरह 20 अंक की अंग्रेजी व्याकरण के प्रश्न पूछे जाते हैं। पूर्व के वर्षों के प्रश्न पत्र को पढ़कर पूछे जाने वाले प्रश्नों का स्वरूप जानकर तदन्तर पाठ्यक्रम में निर्धारित व्याकरण के टॉपिक का अंग्रेजी व्याकरण की बताई गई बी.के. रस्तोगी की पुस्तक जो पूर्णतः पाठ्यक्रम के अनुरूप लिखी गई है उससे अध्ययन के बाद अधिक से अधिक अभ्यास से इस भाग पर अच्छी पकड़ बनाकर अच्छे अंक हासिल किए जा सकते हैं।
- भाग 'ब' में अंग्रेजी गद्यांश (Comprehension) में से पूछे गए पाँच प्रश्नों के उत्तर गद्यांश को पढ़कर देने हैं इसके अभ्यास हेतु पूर्व की परीक्षा के पूछे गए गद्यांश एवं अंग्रेजी व्याकरण की पुस्तक से गद्यांश का हल करें।

iii. अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद में पाँच वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करना होता है तथा संक्षिप्तीकरण (Precis Writing) में दिए गए अंग्रेजी गद्यांश को पढ़कर हिन्दी की तरह सरल एवं बोधगम्य अंग्रेजी भाषा में एक तिहाई शब्दों में सार लिखना है।

iv. भाग 'स' में हिन्दी निबंध की तरह अंग्रेजी में 200 शब्दों में पेरोग्राफ लिखना होता है जिसे लिखते समय ऊपर बताई गई बातों का ध्यान रखना है पिछले दो वर्षों के प्रश्नपत्र में पूछे गए टॉपिक का अवलोकन करें तो इसमें भी एक या दो समसामयिक या वैचारिक विषयों के बारे में अवश्य पूछा जाता है—

a. वर्ष 2016 के प्रश्नपत्र के टॉपिक—1. Generation Gape 2. Women Empowerment 3. Incredible India

b. वर्ष 2016 की विशेष परीक्षा के टॉपिक 1. Swachh Bharat Movement 2. Global Warming 3. Digital India

c. वर्ष 2018 के प्रश्नपत्र के टॉपिक—1. The Future of English in India
2. The Effects of Present day credit culture 3. Travelling helps build Personality

v. भाग 'स' में ही दिए गए विषयों (Theme) में किसी एक पर 150 शब्दों में हिन्दी की तरह भाव विस्तार (Elaborate) करना होता है जैसे—

वर्ष 2016 के प्रश्नपत्र के विषय (Theme) 1. No pain No gain 2. Cell phone is more than a phone

3. Uneasy lies the head that wears the crown

वर्ष 2018 के प्रश्नपत्र के विषय (Theme) 1. Your enemies are your best friend 2. All's well that ends well

3. Justice delayed is justice denied.

वर्ष 2021 के प्रश्नपत्र के विषय (Theme) 1. Child is the father of man. 2. Sweet are the uses of adversity. 3. No man should be condemned unheard.

vi. भाग 'स' के तीसरे प्रश्न के रूप में पत्र, रिपोर्ट आदि पर प्रश्न पूछा जाता है जिसे हिन्दी के पत्र या प्रारूप की तैयारी की तरह सरकारी कार्यालय या प्रामाणिक पुस्तक से प्रारूप का अध्ययन एवं अभ्यास किया जाना उचित रहेगा।

vii. चतुर्थ प्रश्नपत्र हेतु रणनीति—

(a) इस तरह चौथे प्रश्नपत्र में हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषा को समान महत्व देते हुए तैयारी करनी चाहिए। हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों को अंग्रेजी के प्रश्नपत्र तथा हिन्दी से अंग्रेजी अनुवाद को कठिन मानकर उसकी उपेक्षा कदापि नहीं करनी चाहिए। थोड़ा सा अभ्यास करके इसमें रुचि जागृत कर अंग्रेजी विषय को अच्छा तैयार किया जा सकता है। अंग्रेजी माध्यम वालों को हिन्दी विषय की भी अच्छी तैयारी करनी चाहिए ताकि उसमें अच्छे अंक प्राप्त कर सकें।

(b) इस प्रश्नपत्र में दोनों भाषाओं का समावेश होने, प्रश्नों की विभिन्नता एवं अन्य कारणों से निर्धारित समय में सभी प्रश्नों के उत्तर जानते हुए भी लिख नहीं पाते हैं। इसके लिए पूर्वाभ्यास के दौरान दोनों विषयों के लिए अलग-अलग समय निर्धारित करें। निर्धारित शब्द सीमा में उत्तर लिखते हुए पूर्ण क्षमता एवं गति के साथ प्रश्नों के उत्तर दें ताकि कोई प्रश्न का उत्तर आते हुए भी छूटे नहीं। दोनों विषयों के प्रश्नों के उत्तर देते समय वर्तनीगत अशुद्धियों एवं सरल अभिव्यक्ति शैली पर ज्यादा ध्यान दें।

(c) पूर्व की परीक्षा के प्रश्नपत्र एवं मॉडल प्रश्न पत्र हल करके उनका मूल्यांकन करके अपने स्तर पर निरंतर सुधार का प्रयास किया जाना चाहिए।

(d) भाषा में विशेष रूप से अंग्रेजी में अपनी रुचि जागृत करने के लिए अंग्रेजी का एक समाचार पत्र पढ़ें। यदि उपलब्ध नहीं हो तो ऑनलाईन ही पढ़ें लेकिन जरूर पढ़ें। प्रतिदिन समाचार पत्र में आए नए शब्दों को एक रजिस्टर में लिखकर उनका निरंतर रिवीजन करते रहें। साथ ही सम्पादकीय पढ़ने से भी पेरोग्राफ गद्यांश आदि की भी अच्छी तैयारी हो जाती है इसलिए यह अभ्यास नियमित रूप से जारी रखें।

3. साक्षात्कार परीक्षा

आर.पी.एस.सी. द्वारा आयोजित मुख्य परीक्षा में प्राप्तांक के आधार पर रिक्त पदों के सामान्यतः 2 से 3 गुणा तक न्यूनतम क्वालिफाई अभ्यर्थियों को मेरिट के आधार पर साक्षात्कार हेतु आमंत्रित किया जाता है। यह साक्षात्कार 100 अंक का होता है तथा साक्षात्कार के लिए न्यूनतम उत्तीर्णांक निर्धारित नहीं है। साक्षात्कार के लिए आमंत्रित

अभ्यर्थियों का निर्धारित दिनांक व पारी में आर.पी.एस.सी. अजमेर कार्यालय में आयोग अध्यक्ष या सदस्यों व विशेषज्ञ सदस्यों से बनाये गये बोर्ड द्वारा साक्षात्कार लिया जाता है। बोर्ड द्वारा अभ्यर्थी को उसके राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति के ज्ञान, व्यक्तित्व, समसामयिक व राज्यस्तरीय, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों एवं समस्याओं के प्रति उनका दृष्टिकोण व सोच, अभिव्यक्ति, नेतृत्व क्षमता आदि को परखा जाता है। इस परीक्षा के लिए साक्षात्कार की तैयारी के संबंध में पूर्व अध्याय में सिविल सेवा साक्षात्कार की तैयारी टॉपिक को जरूर पढ़ें।

अंतिम चयन : मुख्य परीक्षा के 800 अंक एवं साक्षात्कार के 100 अंक कुल 900 अंक में से प्राप्त अंक के आधार पर मेरिट बनाकर साक्षात्कार देने वाले समस्त अभ्यर्थियों का आर.पी.एस.सी. द्वारा परिणाम जारी किया जाता है। आयोग उक्त मेरिट सूची मय समस्त दस्तावेज के राज्य कार्मिक विभाग जयपुर को प्रेषित कर देता है। कार्मिक विभाग समस्त अभ्यर्थियों का मेडिकल परीक्षण करवाता है। राज्य कार्मिक विभाग द्वारा विभिन्न सेवाओं में रिक्त पदों, अभ्यर्थी का मेरिट में स्थान, अभ्यर्थी की श्रेणी, अभ्यर्थी द्वारा भरी गई सेवा वरीयता आदि के आधार पर अभ्यर्थी को राज्य या अधीनस्थ सेवा का आवंटन किया जाता है। सेवा आवंटन के बाद नियुक्ति आदेश संबंधित विभाग द्वारा जारी कर अभ्यर्थियों का आधारभूत प्रशिक्षण एवं विभागीय प्रशिक्षण रीपा जयपुर के बाद जिलों में पदस्थापन कर दिया जाता है।